जिजीविषा की धनी ये असामान्य प्रतिभाएँ

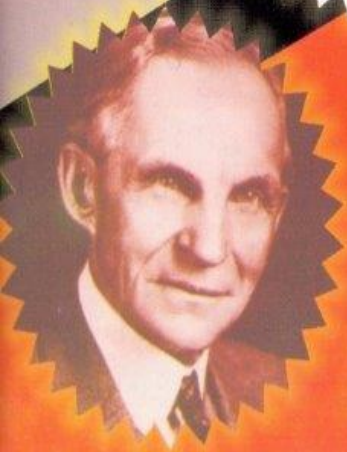

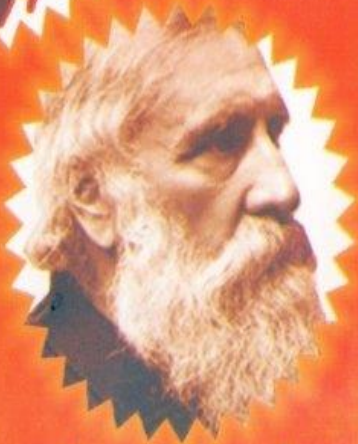

–श्रीराम शर्मा आचार्य

जिजीविषा की धनी ये असामान्य प्रतिभाएँ

लेखक:
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

प्रकाशक :
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा
फोन : (०५६५) २५३०१२८, २५३०३९९
मो. ०९९२७०८६२८७, ०९९२७०८६२८९
फैक्स नं०- २५३०२००

पुनरावृत्ति सन् २०१४ मूल्य १२.०० रुपये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकाशकः
युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३
फोन—०५६५-२५३०१२८, २५३०३९९

लेखकः
पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

पुनरावृत्ति सन् २०१४

मूल्य १२.०० रुपये

मुद्रकः
युग निर्माण योजना प्रेस,
गायत्री तपोभूमि, मथुरा-२८१००३

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मानव रत्न—लाल बहादुर शास्त्री

सन् १९२१। असहयोग आंदोलन का बिगुल बज उठा। भावनाशील लोग समय की पुकार सुनकर लाखों की संख्या में रणक्षेत्र में जा कूदे। विद्यार्थियों ने विद्यालय छोड़ दिए, कर्मचारियों ने काम करना छोड़ दिया, न्यायालय बंद पड़ गए, किसानों ने लगान देना बंद कर दिया, रेल, तार, डाक सेवा का उपयोग बंद हो गया। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया गया।

सोलह वर्ष के एक किशोर की आत्मा भी युग की पुकार सुनकर अधीर हो उठी। वह जानता था कि विद्यालय छोड़ने से उसका ही नहीं उसकी विधवा माँ का भविष्य भी अंधकार में हो जाएगा। पिता जिसे मझधार में छोड़ गए थे, अब बेटा भी आंदोलन करने लगा, यह जानकर वह कितनी दुखी होगी। रिश्तेदार तो पहले ही उसकी देशभक्ति को खतरनाक कहते रहे हैं। ये विवशताएँ उनके मार्ग में बाधा बनकर खड़ी थीं। फिर भी जीत अंत:करण की आवाज की हुई, वह अध्यापक के सम्मुख जा खड़ा हुआ। ''गुरूजी अब आज्ञा दीजिए।'' अध्यापक इस किशोर की भावनाओं को समझते थे और घर की स्थिति भी जानते थे। उन्होंने समझाया ''बेटा हाईस्कूल परीक्षा में कुछ ही महीने रहे हैं। परिश्रम करके तुम अच्छे डिवीजन से पास हो जाओगे तो माँ को सहारा हो जाएगा।'' किशोर ने गुरु जी की बात सुनी पर वह रुक न सका। अपने तथा अपनी बेसहारा माँ के हितों को देश हितों पर बलिदान करके असहयोग आंदोलन में भाग लेने वाला यही किशोर एक दिन भारत का प्रधानमंत्री बना। अन्य राष्ट्रों के नेताओं ने आश्चर्य से सुना कि भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री के पास अपना घर का मकान भी नहीं, जिन्होंने प्रधानमंत्री बनकर किश्तों पर कार खरीदी। महामंत्री चाणक्य जैसा ही यह एक अनुपम उदाहरण था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शास्त्री जी न तो बड़े बाप के बेटे थे, न किसी सहयोगी ने ही इन्हें इस पद तक पहुँचने में सहायता की थी। उनके मानवीय सद्गुणों व कर्मठता ने ही इन्हें इस गुरुतम पद पर पहुँचाया था।

शास्त्री जी का जन्म २ अक्टूबर, सन् १९०४ में मुगल सराय में हुआ। इनके पिता श्री शारदा प्रसाद एक शिक्षक थे। अल्पायु में ही पिता का देहांत हो गया। बचपन से ही इनकी परीक्षा आरंभ हो चुकी थी। घर की आर्थिक स्थिति बहुत ही कमजोर थी, सहारे के नाम पर केवल माता राजदुलारी का सहारा था। पितृहीन बालक ने अपने आप एक सहारा खोज लिया। वह सहारा था पुण्य सलिला गंगा का। गंगा ने उन्हें तैरना सिखाया, जीवन के उतार-चढ़ावों में साहसी बने रहने का पाठ पढ़ाया और अपनी ही तरह निर्मल निष्कलुष बने रहने की सामर्थ्य प्रदान की।

बारह वर्ष की आयु में वे अपने साथियों के साथ गंगा पार मेला देखने गए। वापस लौटने के लिए उनके पास नाव वाले को देने को पैसे नहीं थे। आधा मील गंगा का पाट उन्होंने तैरकर पार किया जिसे अच्छे-खासे पहलवान भी नहीं कर पाते थे। परिस्थितियों से जूझना वे बचपन से ही सीखने लगे थे। साधनों का अभाव प्रगति में बाधक नहीं होता, यह प्रेरणा उन्हें बचपन से ही मिल चुकी थी।

पढ़ने के लिए वे नाना के घर रहे, फिर मौसा के घर रहे, किंतु परावलंबन को उन्होंने कभी नहीं अपनाया। उन्होंने अपनी स्थिति को स्वीकार तो किया कि उनके पिता नहीं हैं, पर यह स्वीकारोक्ति उन्हें सदाचारी परिश्रमशील तथा ईमानदार बनाए रही।

शास्त्री जी तीव्र बुद्धि नहीं थे, वे कक्षा में यदा-कदा ही प्रथम आए। इसके पीछे उनका परिश्रम ही था। वे मन लगाकर पढ़ते थे, परिश्रम करते थे, इसी का शुभ परिणाम था कि वे हिंदी विद्यापीठ से 'शास्त्री' परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण कर सके। उनका प्रमुख विषय दर्शन था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पारिवारिक स्थिति साधारण होते हुए भी लाल बहादुर शास्त्री ने अपना लक्ष्य साधारण नहीं रखा। ऐसी परिस्थितियों में कोई अन्य साधारण साहस वाला आदमी होता तो हाईस्कूल पास करके कहीं नौकरी खोज लेता, कहीं क्लर्क या अध्यापक बन जाता। शास्त्री जी ने एक सच्चे देशभक्त की भूमिका निभाने में इस स्थिति को कभी बाधा के रूप में नहीं माना।

पढ़ाई समाप्त करने के बाद में यदि वे स्वयं को अकिंचन मानते तो कोई नौकरी खोजते, पर उन्हें अपने देशवासियों की सेवा करनी थी। रोटी का सवाल अवश्य सामने था। उसे पूरा करने की तैयारी वे बचपन से ही कर चुके थे। अपनी आवश्यकता वे कम-से-कम रखते थे। अपना सारा काम हाथ से कर लेते थे। उन्होंने लोकसेवा संघ में अपने मित्र अलगूराय चौधरी के साथ अछूतोद्धार का काम आरंभ किया। इनकी लगन, श्रम तथा तत्परता से लाला लाजपतराय बड़े प्रभावित हुए। वे इस संघ के आजीवन सदस्य बना दिए गए। उन्हें सात रुपए भत्ता मिलता, यह बाद में सौ रुपए हो गया, जिसे वे घर वालों को दे देते थे।

सन् १९२७ में उनका विवाह ललिता देवी के साथ हुआ। शास्त्री जी ने अपने जीवन का ध्येय उनको बताया। अपने पति के इस ध्येय को ललिता देवी ने अपना ध्येय मान लिया। शास्त्री जी की देश जाति के लिए जो उपयोगिता थी उसे श्रीमती ललिता देवी ने स्वीकार किया तथा उनके उद्देश्य में सहायक बनीं। पत्नी का सहयोग पाकर जहाँ वे पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निश्चिंत हो गए वहाँ ललिता देवी अपने पति की महानता के आगे श्रद्धाभूत हो उठीं।

शास्त्री जी को जो भी काम दिया जाता उसे वे पूरे मनोयोग से ईश्वर की उपासना की तरह करते, इसका परिणाम यह हुआ कि उनकी महत्ता स्वीकार की जाने लगी। बड़े-बड़े नेता इन पर विश्वास करते और वे कांग्रेस के माने हुए नेताओं में गिने जाने लगे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इनकी प्रगति का आधार परिश्रमशीलता, कर्म के प्रति निष्ठा और मनोयोग था।

आदर्शों के प्रति इनका आग्रह निरंतर पुष्ट होता गया। जब ये नैनी जेल में थे उनकी पुत्री सख्त बीमार हो गई। पैरोल पर छूटने के लिए यह लिखित आश्वासन देना पड़ता था कि वे इस अवधि में किसी आंदोलन में भाग नहीं लेंगे। यद्यपि वे किसी आंदोलन में भाग नहीं लेने वाले थे फिर भी लिखकर देना अनुचित मानते थे, इस कारण वे अपनी पुत्री को देखने का विचार स्थगित कर चुके थे। जेलर को उन्हें बिना शपथ लिखाए ही छुट्टी देनी पड़ी।

अपनी आवश्यकताओं के प्रति उन्होंने कभी ध्यान नहीं दिया। जेल जीवन में जहाँ अन्य लोग छोटी-छोटी चीजों के लिए जेल अधिकारियों से प्रार्थना करते थे, वहाँ शास्त्री जी स्वयं के हिस्से की वस्तु भी दूसरे को देकर प्रसन्न होते थे। अपना लैंप एक साथी को देकर उन्होंने कड़ुवे तेल के दीए के सामने टालस्टाय का 'अन्ना केरेनिना' पढ़ डाला था। जेल जीवन उन्होंने एक तपस्या समझकर बिताया। उन्हें देखकर जेल के अधिकारी तथा सहयात्री आश्चर्य करते थे कि जेल में भी इनका जीवन एक व्यवस्थित क्रम से चलता रहता है। इस काल में उन्होंने कितने ही ग्रंथ पढ़े। जेल में ही उन्होंने 'मैडम क्यूरी' की जीवनी लिखी।

आजादी के आंदोलन में शास्त्री जी की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही थी। जेल में रहते हुए भी रात-दिन श्रम करते रहे। जेल में रहे या खुले में उनका यह श्रम चलता ही रहा। आंदोलन के नेतृत्व में, जन-साधारण के प्रयासों में, संगठन में जहाँ भी उनका हाथ लगा वहाँ काम बना, बिगड़ा नहीं। उसका कारण यह था कि उन्होंने अपने काम की चिंता की, नाम की चिंता नहीं की। अन्य नेताओं से आगे बढ़ने का एकमात्र कारण यही था कि इन्होंने अपनी व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा कोई रखी ही नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुबला, पतला, ठिगना साधारण-सा दीखने वाला वह लौह पुरुष अपने कठोर परिश्रम, निष्ठा, विश्वास के कारण उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में संसदीय सचिव बनाया गया। उत्तर प्रदेश मंत्रिमंडल में जब ये गृहमंत्री पद पर थे तब काँग्रेस के महामंत्री बनाए गए। इनका एक ऐसा व्यक्तित्व बन गया था कि इन्हें आपत्तिकालीन स्थिति में कोई काम सौंपा जा सकता था। सौंपे काम की सफलता निश्चित थी।

केंद्रीय मंत्रिमंडल में रेलमंत्री के रूप में इन्होंने बड़ा अच्छा काम किया। किंतु दो रेल दुर्घटनाओं के कारण इन्होंने त्यागपत्र दे दिया। इसके विरोध में हजारों तार आए पर उन्होंने फिर इस पद को स्वीकार नहीं किया। इस त्याग ने उनकी महत्ता को और बढ़ा दिया।

इस साधारण नागरिक के दायित्व का वहन करने में ईमानदारी बरतने का शुभ परिणाम यह हुआ कि भारत को एक ईमानदार नेता, एक ईमानदार प्रधानमंत्री मिल सका। पद का कभी मोह शास्त्री जी को नहीं रहा। वे अपने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदार रहे। उन्होंने राष्ट्र के पैसे को अपने उपयोग में लेने की सोचा तक नहीं। सदा वे अपने को एक साधारण आदमी, जनता का एक सेवक मानते रहे। उनकी ईमानदारी ने उन्हें रेलमंत्री पद से इस्तीफा देने को मजबूर किया। उनकी ईमानदारी ही थी जिसने कामराज योजना के अंतर्गत सबसे पहले अपना पद छोड़ा।

श्री नेहरू के मरने के बाद भारतीय तथा विदेशी शास्त्री जी को आरंभ में उस रूप में स्वीकार नहीं कर पाए, जिस रूप में नेहरू को किया जाता था, किंतु अपने अठारह महीनों के अल्प समय में उस धारणा को निर्मूल सिद्ध कर दिया।

भारत पाकिस्तान युद्ध के समय भारत का जो स्वरूप दुनिया के लोगों ने देखा और शास्त्रीजी की ललकार सुनी वे जानते हैं कि इस नन्हें से कलेवर में कितनी सशक्त आत्मा बैठी हुई है।

इनका जीवन कर्ममय रहा। कभी-कभी तो ये काम में इतने लीन रहते थे कि भोजन करना तक भूल जाते थे। कर्म क्षेत्र में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

शिथिल होते इन्हें कभी नहीं देखा। असंभव दीखने वाला कार्य जब शास्त्री जी को दिया गया तो उनके परिश्रम ने उसे सहज संभव बना दिया। शास्त्री जी ने अपने एक-एक क्षण को कर्म करने में बिताया।

शास्त्री जी जब प्रधानमंत्री बने तो उनका कुछ ऐसा व्यवहार रहा कि विरोधी भी उनकी प्रशंसा करते थे। लोकप्रियता का यह गुण उन्होंने अपने प्रारंभिक जीवन से ही विकसित करना आरंभ कर दिया था। काँग्रेस में आपसी मतभेद दूर करने में इनकी सानी का कोई दूसरा न था। राजनीति सरोवर के पंकज शास्त्री जी सदा राजनैतिक छलछद्मों से दूर रहे।

सन् १९६६ में हुई ताशकंद वार्त्ता की समाप्ति पर यह सूचना सुनकर विश्व का प्रत्येक नागरिक रो पड़ा कि महान व्यक्ति अब हमारे बीच नहीं रहा। मरने पर अपने उत्तरदायित्वों के लिए कोई तो मकान, जमीन-जायदाद, धन-दौलत छोड़ जाते हैं पर शास्त्री जी ने कभी स्वयं को अपने परिवार तक सीमित नहीं रखा। वे सारे देश के थे। अपने परिवार व परिजनों के लिए आदर्श जीवन जीने की महान पूँजी छोड़ गए। ❐

सामान्य व्यक्ति से लाखों कारों के निर्माता- हैनरी फोर्ड

हैनरी तब मिसिगन राज्य के अपने गाँव की एक पाठशाला में पढ़ते थे। वे अभी कक्षा में ही थे कि एक किसान आया और अध्यापक से शिकायत करने लगा देखिए साहब! आपके बच्चों ने खाड़ी में एक बाँध बना दिया है जिससे मेरे खेत में पानी भर गया है।

आश्चर्यचकित रह गए—अध्यापक। यह शैतानी कौन कर सकता है। या इतनी सूझबूझ और समय वाला लड़का कौन है जो इस उमर में ही खाड़ी को बाँधने का साहस कर सके। पहले तो उसे विश्वास नहीं आया, इसलिए लड़कों से पूछा—"तुम लोगों में से किसी ने बाँध बाँधा है क्या?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

''जी हाँ''—एक छात्र ने उठकर कहा। जो हैनरी ही था—''पर मुझे यह विचार भी नहीं आया था कि पानी पीछे की ओर चला जाएगा और खेत को हानि पहुँचेगी।''

इस स्वीकारोक्ति ने अध्यापक को विस्मय विभोर कर दिया। परंतु सामने ही किसान खड़ा था। अत: उन्होंने उसे संतुष्ट करने के लिए हैनरी को डाँटा और कहा—''देखो हैनरी। तुम्हारी इस नादानी से आपका कितना नुकसान हो गया है। तुम लोगों को दूसरों की संपत्ति का सम्मान करना चाहिए। जाओ बाँध तोड़कर आओ।''

हैनरी अपने उन साथियों को साथ लेकर खाड़ी पर गए और वह बाँध तोड़कर आए। इस प्रकार हैनरी की बचपन से ही नए-नए प्रयोगों और इस प्रकार के सूक्ष्म साहसों में रुचि थी। बाँध तोड़कर जब वे वापिस शाला में आए तो अध्यापक ने हैनरी को दंडित करते हुए कहा—''अब तुम विद्यालय समाप्त होने के बाद संध्या तक यहीं रहा करोगे और हम लोगों के साथ ही तुम्हारी छुट्टी हुआ करेगी।''

इस प्रतिबंध का हैनरी पर कोई प्रभाव नहीं होना था अत: वे उसी मस्ती के साथ अपना स्वाभाविक जीवन जीने लगे। उन्हें यंत्रों और घड़ियों के पुर्जों से भी बेहद लगाव था। एक बार की बात है हैनरी ने अपनी कक्षा के एक सहपाठी की घड़ी खोल डाली। वे उसका निरीक्षण कर ही रहे थे कि मास्टर जी की निगाह उन पर पड़ गई । उनके स्वयं के लिए भी घड़ी एक जटिल यंत्र था अत: डाँटते हुए उन्होंने हैनरी से कहा—''हैनरी यह क्या कर रहे हो? क्या अब तुम इस घड़ी को ज्यों-का-त्यों जमा सकते हो?''

शांत हैनरी अध्यापक की ओर कुछ न बोलते हुए देखने लगे। जैसे उनकी आँखें कही गई बात को पुन: दोहराने का इशारा कर रही हों। अध्यापक ने समझा हैनरी के होश ठंडे पड़ गए हैं। अत: उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कहा—''ठीक है। जब तक तुम इस घड़ी को ठीक नहीं कर लेते तब तक तुम यहाँ से नहीं जाओगे।''

हैनरी ने मात्र दस मिनट के समय में ही वह घड़ी ठीक कर दी। यह देखकर अध्यापक की आँखें फटी-की-फटी रह गईं। हैनरी ने घड़ी के पुर्जों को अलग करते समय उनकी पूर्व दशा को अच्छी प्रकार स्मरण रखा था। घड़ी की संरचना समझ लेने के बाद हैनरी फोर्ड फिर इसी दिशा में आगे बढ़े। उन्होंने घड़ी के पुर्जों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त किया और पड़ोस की सब घड़ियाँ वे ही ठीक करने लगे। पर जिस सफलता के कारण उन्हें सर्वाधिक याद किया जाता है वह है मोटरकार। उन्होंने सर्वप्रथम बसों और मोटर कारों का आविष्कार किया। जिस समय उन्होंने पहली कार बनाई थी तब वह बिल्कुल ही प्रारंभिक स्थिति में थी और लोग कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि यह बिना घोड़े की गाड़ी किसी दिन सचमुच ऐश्वर्य और संपन्नता का प्रतीक बन जाएगी। मोटर कार के आविष्कार की कहानी सौ वर्षों से अधिक ज्यादा पुरानी नहीं है। पर इस बीच इस आविष्कार में जितने संशोधन किए गए और जितना इसका विकास हुआ उतना शायद ही किसी दूसरे आविष्कार का हुआ है। और यह भी एक आश्चर्य की बात है, कि मोटर कार को आधुनिक रूप देने में फोर्ड की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। आज स्थिति यह है कि फोर्ड कंपनी की कार मजबूती और टिकाऊपन में सबसे श्रेष्ठ समझी जाती है।

एक ही जीवन में प्रगति के इतने उच्च शिखर को छूने का श्रेय फोर्ड की लगन, परिश्रमशीलता, सूझ-बूझ और एकाग्रता को है। हैनरी फोर्ड का जन्म अमेरिका के मिशिगन राज्य में डियर बोर्ध नामक स्थान पर ३० जुलाई, १८६३ को हुआ था। आर्थिक उत्थान के लिए आवश्यक सभी गुण उन्होंने अपनी माता मेरीलिटोगोट से विरासत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

के रूप में प्राप्त किए थे। वे एक संपन्न किसान की बेटी थीं जबकि हैनरी के पिता एक साधारण कृषक थे।

विलियम फोर्ड ने अपनी पत्नी के निर्देशों पर चलकर सामान्य दर्जे से भी नीचे के मजदूर किसान को मध्यम वर्ग तक उठाया था। हैनरी इनकी पहली संतान थे। जब वे पाँच वर्ष के हुए तो पास ही कस्बे के स्कूल में उन्हें भर्ती कराया गया। स्कूल जाने के लिए उन्हें ढाई मील की दूरी पैदल ही तय करनी पड़ती थी। खाना घर से ही साथ लेकर जाते, सुबह निकलते और रात में वापस लौटकर घर पहुँच जाते। उनके पिता की स्वाभाविक आकांक्षा यह थी कि अपने बेटे को अच्छा किसान बनाएँ, पर हैनरी उधर दूसरी दिशा में प्रवृत्त हो रहे थे। घर से स्कूल और स्कूल से घर लौटते समय वे उधेड़बुन में लगे रहते थे। जब वे ग्यारह वर्ष के हुए थे चाय की केटली, खाड़ी हल और छोटे–छोटे पुर्जे उनके खिलौने बने। वे जब इस तरह के खिलौनों से खेलते तो उनसे पिता बहुत नाराज होते थे। कारण कि उनकी समझ से यह कोई अच्छा काम नहीं था। जब वे अपने पड़ोसियों की घड़ियाँ सुधारने लगे तो पिता ने उनको ठठेरा तक कह डाला।

पिता से जब वे बहुत तंग आ गए और पिता विलियम भी उनके कार्यों में बाधा डालने लगे तो हैनरी ने घर छोड़ दिया और डेट्राइट जाकर एक कारखाने में काम करने लगे। इस कारखाने में उन्हें चालीस रुपया प्रतिमास मिलता था जबकि निर्वाह के लिए इससे अधिक पैसों की आवश्यकता थी। इसके लिए उन्होंने किसी सर्राफ के यहाँ पार्ट टाइम काम ढूँढ़ लिया और अपनी समस्या को हल किया। इस प्रकार मेहनत के द्वारा जो कुछ मिलता उससे अब बचत भी होने लगी। कारखाने से उन्हें विशेष लगाव था। क्योंकि वहाँ बहुत से यंत्रों के संबंध में नई जानकारी मिलने की आशा थी। संध्या समय उन्होंने घड़ियाँ सुधारना भी शुरु कर दिया था। अभी उन्हें डेट्राइट में साल भर भी नहीं हुआ था कि घर से खबर आई पिताजी की तबीयत

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खराब हो गई है। हैनरी सब काम छोड़कर घर चले आए और उनका बताया काम करने लगे। स्वास्थ्य खराब हो जाने के कारण विलियम खेती बाड़ी नहीं सँभाल सकते थे। अत: वह काम भी हैनरी के ही जिम्मे पड़ा। साल भर तक उन्होंने खेत जोता और फसल काटी। खेती करते समय उन्होंने देखा कि इस काम में काफी समय प्राय: चौबीसों घंटे कृषि की देखभाल और सार-सँभाल में ही बीत जाता है। अत: वे विचार करने लगे कि क्यों न कृषि कार्यों में विज्ञान का प्रयोग हो । उन दिनों ट्रैक्टर और फोडेशन का कहीं नामो-निशान नहीं था। हैनरी ने खेती में काम आने वाले वाष्प इंजन में रुचि लेना शुरु किया और उसमें कुछ ऐसे सुधार किए जिससे कि इंजनों की कार्यक्षमता बढ़ जाए और उनके रख रखाव पर भी अधिक खर्च न आए। यह सुधार करते समय हैनरी को इंजन की सभी बारीकियों का भी भली-भाँति ज्ञान हो गया। यही नहीं वे अपने खेत के आस-पास रहने वाले किसानों के इंजन भी सुधारने लगे। इसी बीच इंजन निर्माता कंपनी के प्रतिनिधि से उनकी मुलाकात हुई और उन्होंने अपने क्षेत्र भर के इंजन सुधारने का अनुबंध कर लिया। अब जिस किसी भी किसान का इंजन खराब होता उसे सुधारने के लिए हैनरी को ही बुलाया जाता।

फार्म पर रुकने के समय का उन्होंने अधिक-से-अधिक उपयोग किया और कुछ ऐसी विधियाँ ढूँढ़ निकालीं जिनसे कि साल भर में मुश्किल से एक महीने काम कर पूरे वर्ष की फसल ली जा सकती थी और शेष ग्यारह महीने का उपयोग अन्य कार्यों में किया जा सकता था। उन्होंने ट्रैक्टर की कल्पना की और घर पर ही एक बेलन बना डाला। यह काम पूरा करने में उन्हें काफी समय और श्रम लगाना पड़ा। बेलन में एक बेकार पड़े घास काटने की मशीन के पहिए लगाए और परीक्षण के लिए गाड़ी को चलाया। गाड़ी चालीस फुट तक चली और रुक गई।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सामान्य लोगों की दृष्टि में यह प्रयोग की सफलता नहीं थी परंतु हैनरी जानते थे कि यदि गाड़ी आज चालीस फुट चली है तो कल ज्यादा दूर भी चल सकेगी।

इसी बीच उन्होंने विचार किया और न जाने क्या सोचकर पिता से बोले—''पिताजी यदि मैं विवाह कर लूँ तो आप मुझे क्या चीज देंगे।''

हैनरी के इस कथन से विलियम को बड़ा संतोष हुआ। उनका विचार था कि बेकार ही यंत्रों में उलझे हैनरी को इससे अक्ल आ जाएगी और वह इन सब झमेलों को छोड़कर उपयोगी कार्यों में लग जाएँगे, अतः उन्होंने हैनरी से कहा—''मैं तुम्हें रेक्नर रोड के सामने वाला अस्सी एकड़ का टुकड़ा दे सकता हूँ और वहाँ मकान के लिए जितनी लकड़ी की जरूरत पड़ेगी वह भी दूँगा।''

हैनरी ने इससे पूर्व ग्रीनफील्ड टाउनशिप की निवासिनी एक लड़की क्लारा ब्रायण्ड को अपने जीवन साथी के रूप में पसंद कर लिया था। क्लारा भी हैनरी को पसंद करती थी और वह उनकी प्रतिभा से प्रभावित थी। अतः दोनों ने परिणय बंधन में बँधने का निश्चय कर लिया था। हैनरी ने अपने पिता द्वारा जमीन पर उसके लिए आवश्यक लकड़ी मिलने का आश्वासन प्राप्त कर लकड़ियाँ कटवाना आरंभ किया और उनसे इकतीस फुट लंबी और इकत्तीस फुट चौड़ी डेढ़ मंजिली इमारत तैयार करवाई। इसके बाद अप्रैल १८८८ में क्लारा तथा हैनरी दाम्पत्य सूत्रों में बँध गए। रेक्नर रोड पर मकान के साथ मिले प्लाट में खेती, गौशाला और खलिहान के लिए भी पर्याप्त जमीन थी। लेकिन न तो यह मकान रहने के लिए बनाया गया था और न ही जमीन के लिए मात्र सुरक्षित छोड़ा गया था। उन्होंने इस स्थान पर एक कारखाना बनाने की योजना बनाई थी और धीरे-धीरे उस योजना को क्रियान्वित भी किया। वहाँ तीन लकड़ी चीरने की मशीन और अन्य कई मशीनें लगाईं। एक दिन हैनरी ने अपनी पत्नी से कहा—''क्लारा मेरा विचार 'डेट्राइट' जाने का हो रहा है। मैं बिना घोड़े की गाड़ी बनाना चाहता हूँ।''

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

'क्या कहा'? क्लारा फोर्ड चौंककर बोली—'बिना घोड़े की गाड़ी मैंने आज तक न तो देखी है और न सुनी है।' हैनरी ने कहा—'यह बात मेरे मन में काफी दिनों से है और मुझे विश्वास है कि यह संभव है।'

'किस प्रकार' यह पूछने पर फोर्ड ने अपनी पत्नी को कागज पर बिना घोड़े की गाड़ी का कल्पना चित्र बनाकर दिखाया। साथ ही उन्होंने वाष्पशक्ति के संबंध में भी समझाया और उससे चलने वाली नाव, इंजन आदि के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि मैं वाष्प से गाड़ी चलाने की अपेक्षा पेट्रोल से गाड़ी चलाना ज्यादा पसंद करूँगा क्योंकि इससे गाड़ी इतनी भारी नहीं बनेगी जितनी कि वाष्प इंजन से।

क्लारा ने सारी बात समझ ली और उन्होंने विश्वास कर लिया कि उनके पति हैनरी केवल कल्पना ही नहीं कर रहे, वरन उसे साकार करने की दिशा में भी बढ़ रहे हैं। और वे दोनों डेट्राइट आकर रहने लगे। निर्वाह के लिए कोई-न-कोई काम करना ही था। दिन का समय वे बिना घोड़े की गाड़ी बनाने में लगाना चाहते थे, अत: उन्होंने रात के लिए एलिस लाइटिंग कंपनी में नौकरी कर ली और दिन का समय अपने काम में व्यतीत करने लगे। उनके मकान के पीछे खाली पड़े थोड़े-से स्थान पर वे मोटर कार बनाने का प्रयोग करते रहे। प्राय: वे दिन भर इसी काम में व्यस्त रहते। पड़ोसी कहते निठल्ला और झक्की आदमी है लेकिन इन टिप्पणियों का हैनरी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, वे चुपचाप अपने काम में लगे रहे, मानवता को अपनी कर्म साधना से लाभान्वित करने वाले व्यक्ति को लोगों ने प्रारंभ में क्या-क्या नहीं कहा है?

१८९१ ई० में डेट्राइट आए थे। उनकी बनाई कार कोई दो वर्षों में तैयार हुई। अप्रैल का महीना था। हल्की-हल्की बूँदाबादी हो रही थी और फोर्ड अपनी पत्नी के साथ उस बिना घोड़े वाली गाड़ी को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

परखने के लिए घर में से बाहर आए। इस गाड़ी में टायर और गद्दी को छोड़कर शेष भाग उन्होंने स्वयं ही तैयार किए थे। फोर्ड दंपत्ति जब मकान से बाहर आए तब भी वर्षा हो रही थी। दोनों गाड़ी में बैठ गए फोर्ड ने गाड़ी का इंजन स्टार्ट किया और तेज आवाज करती धुआँ उगलती वह गाड़ी दौड़ी तो गली तक पहुँच गई। फोर्ड ने गाड़ी को रोका, इंजन की आवाज सुनकर आस-पास रहने वाले पड़ोसी भी वहाँ इकट्ठे हो गए और देखने लगे। फोर्ड का चेहरा इस सफलता के तेज से चमक रहा था। वे गाड़ी को धकेलकर वापस उसी स्थान पर लाए जहाँ से कि उसे स्टार्ट किया था। तब गाड़ी को पीछे की ओर चलाने का प्रबंध ही नहीं था और न ही उसे मोड़ने की व्यवस्था। परंतु आज की बिना आवाज किए सड़कों पर सरपट भागने वाली गाड़ियों की यह माता थी।

इसके बाद फोर्ड ने गाड़ी में कई सुधार किए और उसे आज का सा मिलता-जुलता रूप दिया। कार बनाने के लिए उन्होंने एक कारखाना भी खोला और संपन्न लोग उनकी बिना घोड़े की गाड़ी तत्काल खरीद लिया करते थे। सफलता और समृद्धि के उच्च शिखर पर पहुँचने के बाद हैनरी फोर्ड ने उन दिनों का स्मरण करते हुए एक बार कहा था—"मैंने कभी सपने में भी यह ख्याल नहीं किया कि मैं इस आविष्कार से धन कमाऊँगा।" लेकिन वे अपने जीवन के अंतिम दिनों में संसार के बड़े उद्योगपति बन गए। हाइलैंड पार्क स्थित फोर्ड कंपनी का कारखाना दो सौ एकड़ जमीन पर फैला है। इस कारखाने में पाँच सौ विभाग हैं और हजारों लोग उनमें काम करते हैं।

इस युग को एक नया औद्योगिक आयाम देने के साथ फोर्ड के पास मानवीय करुणा से आप्यायित एक हृदय भी था। जिसकी आवाज वे हर क्षण सुनते रहे। और अपने उपार्जन का एक अंश मानवता की सेवा में लगाते रहे। ८३ वर्ष की अवस्था में फोर्ड का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

निधन ७ अप्रैल, १९४७ को हुआ। बड़े-बड़े लोग उनके मित्र थे और यहाँ तक प्रख्यात वैज्ञानिक एडिसन भी उनके मित्र थे। ❐

नेत्रहीन बेरिस्टर रुस्तमजी मे० अलपाई वाला- एक सच्चे सेवाव्रती

जीवन के तीस वसंत भी न देख पाए थे कि अलपाई वाला की नेत्र ज्योति सदा के लिए बुझ गई। एक सम्मानित बेरिस्टर के लिए इससे बड़ा कष्ट क्या हो सकता है कि वह अपाहिज, अपंग का जीवन व्यतीत करे। जो क्षमता तथा प्रतिभा उसके अंदर है उसका सदुपयोग तक न कर सके।

मिलने-जुलने वाले परिचित-परिजन संवेदना प्रकट करने के लिए आते। अलपाई वाला को लगता कि वे उनका उपहास कर रहे हैं। चिल्ला-चिल्लाकर कह रहे हैं कि तुम अब कुछ नहीं कर सकते। तुम अपने और समाज के लिए मर चुके हो जीवन का अर्थ अब तुम्हारे लिए केवल बेसहारा रह गया है। उनकी अंतरात्मा को यह स्थिति स्वीकार न हुई। उन्होंने अपने आप से कहा नहीं, दो आँखें चली जाने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। मैं इस स्थिति में भी बहुत कुछ कर सकता हूँ।

एक संपन्न परिवार में उत्पन्न बेरिस्टर होते हुए भी लोगों ने मुझे बिल्कुल व्यर्थ समझ लिया है। जिन लोगों के पास न धन संपदा ही है और न विद्या, न प्रतिभा ही, उन चक्षुहीनों की दशा कितनी बदतर हो सकती है, इस कल्पना से ही वे सिहर उठे। उन्होंने संकल्प लिया कि वे उन लोगों की सेवा में अपना शेष जीवन व्यतीत करेंगे तथा यह बता देंगे कि वह अपाहिज होते हुए भी व्यर्थ नहीं हैं।

रुस्तमजी मेहरवानजी अलपाई वाला का जन्म ७ मई, १८८७ के दिन बंबई के एक प्रसिद्ध विधि व्यवसायी पारसी परिवार में हुआ। पढ़ने में बचपन से ही रुचि थी पर आँखें कमजोर थीं। तेरह वर्ष की आयु में ही इनको चश्मा लगाना पड़ा। आँखों का पढ़ाई के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिए सक्षम होना अनिवार्य है। ज्यों-ज्यों ये शिक्षा के सोपान चढ़ते गए त्यों-त्यों आँखें क्षीण होती गईं।

एल० एल० बी० करने के बाद इनकी इच्छा सालीसीटर बनने की थी पर आँखों की कमजोरी एक बाधा बनकर मार्ग में खड़ी थी। उन्होंने अपने इस इरादे को बदल दिया। वे इंग्लैंड गए वहाँ आँखों का उपचार तथा पढ़ाई दोनों साथ-साथ चलने लगी। आँखों का इलाज कराने से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। वे १९१३ में इंग्लैंड से बेरिस्टर बनकर लौट आए।

बचपन से ही वे संघर्ष करते आ रहे थे। आँखों की कमजोरी उन्हें विवश कर रही थी कि वे उससे हार मान लें पर ये मान नहीं रहे थे। भारत आकर उन्होंने वकालत आरंभ की तब उन्हें आशंका थी कि यह गाड़ी अधिक दिनों चलने वाली नहीं है। वे आशावादी थे। मौत तो एक दिन आने ही वाली है पर उसके भय से हाथ पर हाथ धरकर बैठ जाएँ और काम-धाम सब छोड़ दें तथा रोते रहें तो फिर मनुष्य की प्रगति ही रुक जाएगी। जिस दिन आँखें साफ जवाब दे जाएँगी तब कोई अन्य मार्ग ढूँढ़ा जाएगा। अभी से उनकी चिंता करना पागलपन ही होगा।

ये टेनिस खेलने के शौकीन थे। इनकी आँखों की कमजोरी इस शौक में भी बाधा बनकर आ खड़ी हुई थी। गेंद कभी-कभी आँखों से ओझल हो जाती थी, नजर ही नहीं आती थी। यही हाल वकालत का भी था, पढ़ते-पढ़ते कभी-कभी पुस्तक के सारे पृष्ठ ही धुँधला जाते थे। यह सब होते हुए भी वे कभी हतोत्साह नहीं हुए। परिस्थितियों से एक बहादुर सिपाही की तरह लड़ते रहे। जीत हार की चिंता सिपाही करने लगे तो वह लड़ कैसे पाएगा इस कारण ये भी जीत हार की परवाह नहीं करते थे।

तीस वर्ष की आयु में दृष्टि सदा के लिए जाती रही, किंतु आत्मा के प्रकाश में कोई कमी नहीं आई, वरन उस पर से आवरण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हट गया। अब उनका पूरा जीवन उन अपाहिजों को समर्पित हो गया जिनको आँखों के अभाव में दयनीय जीवन जीना पड़ रहा है।

समाज सेवा करने की ललक तो उनमें थी, पर न तो वे उपदेशात्मक समाज-सुधार करना चाहते थे और न महान कहलाना ही उनका ध्येय था। एक सम्मानपूर्ण साधारण नागरिक का जीवन व्यतीत करके उन अपाहिजों की सेवा करना चाहते थे। उन्होंने शिक्षण संस्थाओं में अध्यापन का काम आरंभ कर दिया। यहीं उनकी भेंट कुमारी तहमीना पान्था से हुई। तहमीना पान्था इस नेत्रहीन विद्वान, सहृदय पुरुष से सहज आकर्षित हुई तथा कुछ समय में ही ये विवाह के पवित्र बंधन में बँध गए।

इस अध्यापन काल में इन्होंने अंधों को शिक्षित करने संबंधी योजनाओं पर चिंतन किया। ब्रेललिपि के माध्यम से उन दिनों नेत्रहीनों को शिक्षित किया जाता था। यह प्रणाली भारत में अभी पूरी तरह उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकी थी।

उन दिनों भारतवर्ष में भिन्न-भिन्न स्कूलों में भिन्न-भिन्न ब्रेल लिपियाँ थीं। एक स्कूल का विद्यार्थी कोई लिपि जानता था, दूसरे स्कूल की लिपि पढ़ने तथा समझने में उसे बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता था, वह उसे समझ नहीं पाता था। एक-एक भाषा की भी कई-कई लिपियाँ थीं। इस विभिन्नता के कारण इसका पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता था। एक विद्यालय से दूसरे में जाने पर नए सिरे से अध्ययन करने के कारण समय तथा श्रम का अपव्यय होता था। अलपाई वाला ने इसे एकरूपता देने का निश्चय किया।

कोई व्यक्ति किसी परमार्थ प्रयोजन में लग जाता है तो उसके लिए रास्ते कई खुल जाते हैं। उन्हें डाक्टर नीलकंठ राय छत्रपति तथा हरिप्रसाद छत्रपति नामक दो समाज सेवी भाइयों का सहयोग मिला। ये दोनों भाई विक्टोरिया मेमोरियल स्कूल का संचालन करते थे। इस स्कूल में अंधों को शिक्षा दी जाती थी। इन्होंने स्वयं भी किंटरगार्डन ब्रेललिपि का अध्ययन किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१९२३ में अंध बधिर सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में अलपाई वाला ने ब्रेललिपियों में एकरूपता लाने की अपनी बात रखी। इस प्रस्ताव से लोगों को इस संबंध में ठोस प्रयास करने की आवश्यकता अनुभव हुई।

अलपाई वाला ने १९२८ में आल इंडिया टीचर्स एसोसिएशन से इस संबंध में पत्र व्यवहार किया। सरकार से भी ब्रेललिपि में एकरूपता लाने के संबंध में कोई ठोस प्रयास करने का आग्रह किया पर उसका कोई कारगर हल नहीं निकल सका। विदेशी सरकार से भारतवासियों के उत्थान की आशा करना ही व्यर्थ सिद्ध हुआ। प्रारंभिक रुकावटों के आने पर भी इन्होंने अपने ध्येय को नहीं त्यागा।

१९४७ में सूरत में ब्लाइंड मेन्स सोसायटी की स्थापना इनके सद्प्रयासों से ही संभव हो सकी। इसके सभी कार्यकर्त्ता अंधे थे। अलपाई वाला इसके अध्यक्ष बनाए गए। १९४८ में इसका प्रांतीय अधिवेशन हुआ। इस समिति ने केंद्रीय सरकार का ध्यान ब्रेललिपि में एकरूपता लाने की ओर आकर्षित किया। सरकार ने ब्रेल विशेषज्ञों की समिति बनाई जिसका काम इस संबंध में कोई योजना बनाकर प्रस्ताव रूप में प्रेषित करना था। अलपाई वाला को इसका सदस्य बनाया गया। सरकार के द्वारा गठित इस समिति में और सब चर्चाएँ तो होती रहीं पर भारतीय ब्रेललिपि के संबंध में कुछ न हो सका।

पर इनके प्रयास में कोई कमी नहीं आई। युनेस्को में इस विषय पर एक विशेषज्ञों की समिति इन्हीं दिनों गठित की गई। अलपाई वाला के आग्रह पर भारत सरकार ने यूनेस्को का ध्यान भारतीय ब्रेललिपि की ओर आकृष्ट किया। १९५२ में इनका चिरपोषित स्वप्न साकार हुआ। यूनेस्को ने भारत के बीस लाख नेत्रहीनों के लिए भारतीय ब्रेललिपि स्वीकार कर ली।

इस सफलता के उपरांत भी वे चुप नहीं बैठे। इन्होंने नेत्रहीनों को व्यवसाय-कुशल बनाने के संबंध में अपने प्रयास जारी रखे।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अन्य देशों में नेत्रहीन जिस प्रकार खेती-बाड़ी, उद्योग, तकनीकि कार्य आदि करके एक सम्मानित नागरिक का जीवन व्यतीत करते हैं, भारतवर्ष में इस प्रकार के प्रशिक्षण केंद्रों तथा औद्योगिक केंद्रों की संख्या नगण्य थी। इसके अभाव में वे लोग दीन-हीन जीवन तो व्यतीत करते ही हैं साथ ही समाज पर भार बनकर जीते हैं। थोड़ा धन उनके प्रशिक्षण में व्यय किया जाए तो वे समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। इससे दुहरा लाभ हो सकता है वे समाज पर भार न रहकर समाज का भार हल्का करें।

१९५२ में इनके सद्प्रयत्नों से नेत्रहीन सम्मेलन का आयोज़न किया गया। यहाँ 'नेशनल ब्लांइड एसोसिएशन' की स्थापना हुई जिसका कार्य इस प्रकार के प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना के लिए प्रयास करना था। श्री अलपाई वाला आजीवन इसके सदस्य रहे।

सुंदर स्वस्थ्य, मिलनसार, विनम्र तथा मृदुभाषी अलपाई वाला एक सफल पति तथा सफल परिवार निर्माता भी थे। उनके परिवार वालों ने कभी उन्हें निराश या चिड़चिड़ाते नहीं देखा। आँखों के अभाव में उनके व्यक्तिगत पारिवारिक उत्थान का काम रुका नहीं।

दूसरा आघात १९५६ में हुआ। अभी उनकी परीक्षा समाप्त नहीं हुई थी। उन्हें पक्षाघात हो गया। कोई साधारण साहस का आदमी होता तो वह धक्का सहन नहीं कर पाता तथा खाट पकड़ लेता, पर जो आदमी तेरह वर्ष की आयु से शारीरिक कमियों को अस्वीकार करता आ रहा हो उसे ये बाधाएँ झुका नहीं सकती थीं। वे दुगुने उत्साह से अपने काम में लग गए, दीपक बुझते समय और भी प्रखर हो उठता है उसी प्रकार जीवन के चौथे आश्रम में प्रखर हो उठे थे।

आँखों की ज्योति नहीं, आधा अंग पक्षाघात से पीड़ित, ऊपर से वृद्धावस्था ने आ घेरा फिर भी उत्साह वही जवानों जैसा रहा। बौद्धिक तथा मानसिक क्षमता में कोई अंतर नहीं आया। सूरत के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पास फंसा नामक ग्राम में उन्होंने उस स्थिति में भी एक अंध प्रशिक्षण केंद्र की स्थापना की।

इस सेवाव्रती जाग्रत आत्मा को १९६१ में भारत सरकार ने इनकी सामाजिक सेवाओं के उपलक्ष्य में 'पदम श्री' से अलंकृत किया।

मनुष्य केवल शरीर ही नहीं है। शरीर का एक अंग अक्षम हो जाने से वह हताश हो जाए यह बहुत बड़ी भूल है। आत्मा और मन की अपरिमित शक्ति पर विश्वास करने वाले कभी शारीरिक अपंगता स्वीकार नहीं करते। अलपाई वाला ने अपने जीवन में एक उदाहरण प्रस्तुत करके दिखाया है कि जिस व्यक्ति का शरीर अक्षम है, आँखें नहीं, आधा अंग पक्षाघात से जाता रहा, वह भी आत्मा के प्रकाश से प्रकाशित होकर लाखों के जीवन में सुप्रभात ला सकता है। शरीर अक्षम हो जाए तो कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता, किंतु जिन लोगों के शरीर स्वस्थ, सबल हैं, वे निरुत्साह तथा निराशा जताएँ तो उन्हें अज्ञानी ही कहा जाएगा। इस सेवाव्रती का जीवन विश्व मानव को सदा प्रेरणा देता रहेगा। ❐

गरीबी से उठकर राजनैतिक अध्यवसाय और पुरुषार्थ की प्रतिमा—एफ० बुन्चे

उन दिनों अमेरिका में वहाँ के मूल निवासियों की बड़ी बुरी दशा थी। बाहर से आकर बसे गोरे अँग्रेज जो संपन्न, समृद्ध और प्रभुसत्ता संपन्न थे, हब्शियों को अपना दास बनाकर रखते थे। उन्हें मनुष्य की तरह नहीं पालतू जानवरों की संपत्ति की तरह रखा जाता था। यही नहीं इससे भी बदतर स्थिति में कहना पड़े तो वस्तुत: जानवर से भी, पशु से भी गई गुजरी बीती दशा ही कही जाएगी, क्योंकि पशु से तो पशु मानकर व्यवहार करना कोई अपराध नहीं है, अनुचित भी नहीं कहा जा सकता, लेकिन मनुष्य से निर्दयतापूर्ण पशुवत व्यवहार किया जाए तो वह मनुष्य पर भी कलंक ही कहा जाएगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नीग्रो लोगों को नागरिक अधिकारों से भी वंचित रखा जाता था, मानवीय अधिकार भी उनसे छीन लिए गए थे। न तो उन्हें पढ़ने की स्वतंत्रता थी और न ही अपना परिवार बसाने की। गुलाम हब्शियों की अपनी कोई संपत्ति होती ही न थी, क्योंकि वे स्वयं ही संपत्ति हुआ करते थे, उनके बीबी-बच्चे भी अपने न होते थे। वे भी अपने मालिक की संपत्ति माने जाते थे। स्वामी उन्हें जब चाहे, जहाँ चाहे जिस कीमत पर दूसरों के हाथ बेच सकते थे।

इन अत्याचारों के प्रति कोई मानवीय आत्मा विरोध व्यक्त करती थी तो उसे विरोध के बदले में मिलती थी प्रताड़ना, दंड और निर्मम मार। उन्हें इस बुरी तरह पीटा जाता था कि जड़ वस्तु पर भी शायद कोई सहृदय व्यक्ति इतनी चोट करना नहीं चाहेगा। अमेरिका के ही कतिपय प्रबुद्ध मानवीय अंत:करण रखने वाले, मानव मात्र में एक ही हदय, एक ही चेतना को संव्याप्त मानने वाले जागरुक आत्मा गोरे व्यक्ति को अपने ही समान मनुष्यों पर होता यह अत्याचार देखा न गया और उन्होंने दास प्रथा के विरुद्ध जन-जागरण का शंख फूँका। कहीं से यह आवाज उठी तो हजारों मानव हृदयों से वही पुकार उठी और एक व्यापक जन-आंदोलन की इस पुकार को तथाकथित मालिकों और हब्शियों के भाग्य विधाताओं ने कुचलने का प्रयास किया।

वही निर्दयता, वही अत्याचार और वही मनमाना असुर व्यवहार उन लोगों के साथ भी किया गया जो ऐसी माँगें उठा रहे थे। लेकिन थोड़ा संयम, थोड़ा समझ-बूझकर। बिना समझ-बूझ के तो कोई विपत्ति खड़ी हो जाने का डर जो था। कई लोग इस आंदोलन के दौरान शहीद हुए। फिर भी उन्हें थोड़ी सफलता मिली और यह व्यवस्था बनी कि जो चाहे वह इस संबंध में तय की गई शर्तें पूरी कर दासता से मुक्त हो सकता है। शेष उन्हें कोई मानवीय अधिकार नहीं दिया गया। जो लोग हर स्थिति में इस कलंक से मुक्त होने की छटपटाहट अनुभव कर रहे थे उन्होंने शर्तें पूरी कर स्वयं को स्वतंत्र कर लिया और इस स्वतंत्रता ने उन्हें और भी बुरी स्थिति में लाकर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पटक दिया। क्योंकि न तो वे पढ़े थे न उन्हें स्वतंत्र जीवन कैसे गुजारा जाए इसका कोई अनुभव था। वे कोई शिल्प या उद्योग भी नहीं जानते थे। इस राहत ने उन्हें गई-गुजरी आजीविका कमाने योग्य भी नहीं रहने दिया।

ऐसी दशा में एक परिवार ने बाल काटने का धंधा शुरु किया, आधे पेट तो कभी भर पेट खाना जुटाने में सफल हो जाया करता था। सुख व सुविधा जो पहले थोड़ी बहुत उपलब्ध हो सकती थीं, वे तो नहीं रहीं, परंतु इन कष्ट कठिनाइयों भरी स्थिति में आनंद और संतोष पहले से ज्यादा मिलने लगा। वह परिवार इस बात का श्रेष्ठ उदाहरण है कि बाह्य परिस्थितियाँ चाहें जैसी हों परंतु स्वतंत्रता का अपना आनंद है और उस स्थिति में कोई कष्ट या कठिनाई नहीं सालती।

उसी परिवार में सन् १९०४ में एक बालक ने जन्म लिया। चूँकि माता-पिता के लिए यह पहली संतान थी जो समाज में उनकी अपनी कही जा सकती थी, अन्यथा इससे पूर्व तो सभी बच्चे मालिक की संपत्ति बन जाते थे। पुत्र वह भी ऐसा जिसे अधिक वार-प्यारपूर्वक मेरा बेटा-बेटा कहा जा सके, सार्वजनिक रूप से उसे पाकर माता-पिता दोनों हर्षोत्फुल्ल हो गए। खुशी से नाच उठे। और उसका नाम रखा बुन्चे। अब इस पुत्र को सुयोग्य नागरिक बनाने की साध माँ-बाप दोनों में जन्मी। लेकिन परिस्थितियाँ थीं कि उन्हें कुछ भी करने से मजबूर किए हुए थीं।

दो जून खाना तो बड़ी मुश्किल से जुट पाता। कपड़ों की भी यही दशा थी। घर के भीतर तो सभी कम-से-कम कपड़ों में रहते। बाहर निकलते तो एक-दूसरे के वस्त्र पहनकर। पेट भरने और तन ढकने में भी वे विवश थे तो अपने बच्चे को पढ़ाते कहाँ से, स्कूल जाते दूसरे बच्चों को देखकर उनके हृदय में भी कसक उठती कि काश हम अपने बेटे को भी इस अवस्था में देख सके होते। आँखों में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उमड़ आए आँसुओं को आहिस्ते से पोंछकर माता-पिता दोनों एक-दूसरे की ओर देखते तथा मुस्कराने की असफल चेष्टा करके रह जाते। कहता कोई किसी से कुछ नहीं, पर दोनों एक-दूसरे के मन में लावा उगलते ज्वालामुखी से अपरिचित नहीं थे।

बुन्चे के माता-पिता की यह साध साध ही रह गई। दोनों बीमार रहने लगे। बुन्चे ने अपनी पहुँच की सीमा तक भाग-दौड़ की। डॉक्टर और चिकित्सा की क्षमता शक्ति तो न थी। सो बुन्चे आकाश की ओर हाथ उठाकर सबसे बड़े चिकित्सक के आगे गिड़गिड़ाया करते और उस महान चिकित्सक ने ऐसा उपचार किया जिससे न केवल उनके माता-पिता जीवन भर के दुःखों से त्राण पा गए, वरन बुन्चे में एक ऐसा बीज डाल गए जो आगे चलकर अंकुरित विकसित और फलित, पुष्पित होकर संसार भर के गिरे हुओं, परिस्थितियों से विवश, जन्म और जीवन से निराश व्यक्तियों के लिए पथ का प्रदीप हो गया।

थोड़े-बहुत समय के अंतर से माता-पिता दोनों ही चल बसे और दोनों ने अंतिम समय अंतिम रूप से अंतिम शब्द बुदबुदाए—बेटा अवसर मिले तो पढ़ना और कुछ ऐसा बनने की कोशिश करना जिससे हमारी ही तरह जीते जी मृत्यु से भी अधिक कष्ट भोग रहे हम जैसे लोगों के लिए कष्ट से मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो सके। उस समय बुन्चे की अवस्था मुश्किल से दस वर्ष की रही होगी। माता-पिता के प्रति श्रद्धा ही कही जानी चाहिए जो अंतिम समय की उनकी इच्छाओं को हृदयपटल पर संकल्प की स्याही से अमिट अक्षरों में अंकित कर देती है। इस अवस्था का अबोध बालक अपने माता-पिता को उनकी इच्छा आज्ञा पूरी करने का आश्वासन देकर प्रतिबद्ध होकर अनाथ और असहाय हो गया।

लेकिन यह अनाथावस्था ही उनके जीवन का नया आयाम बन गई। उनके कोई रिश्तेदार संबंधी थे नहीं जिनका कि वे सहारा प्राप्त

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर सकते थे। गोरा समाज तो अपने बच्चे को नीग्रो की परछाई से भी बचाता था, फिर वह क्यों आश्रय देता और बुन्चे को इस असहाय अवस्था ने ऐसे आश्रय की ओर इंगित किया जो सदा-सर्वदा असहाय अवस्था में सबका सहारा बनता है। वह सहारा था परमात्मा का प्रकाश जो मानवीय अंत:करण में आशा, विश्वास, भ्रम, संकल्प, पुरुषार्थ और साहस का सतरंगा सम्मिश्रण बनकर चमकता है।

शिक्षा प्राप्त करने से पहले जीविका के संबंध में सोचना था और वे काम की तलाश में निकल पड़े। बहुत भटकने के बाद एक अखबार के एजेंट को उन पर दया आई और उसने बुन्चे को अपने यहाँ हॉकर रख लिया। शहर की गलियों और सड़कों पर आवाजें लगाकर वे अखबार बेचने लगे। एक निर्धारित संख्या में प्रतियाँ बेचने पर ही उन्हें तय किया हुआ परिश्रमिक मिल पाता था। कभी तो अखबार जल्दी बिक जाते और बुन्चे पेट भरने योग्य साधनों की ओर से उस दिन के लिए निश्चिंत हो जाते। कभी सारा शहर घूमने पर भी देर तक प्रतियाँ न बिकतीं। लेकिन बुन्चे थे कि जब तक सब अखबार नहीं बिकते चैन की साँस नहीं लेते। इस काम से जो समय बचता उसे बुन्चे और छोटे-मोटे कामों में लगाते तथा समय बचाकर पढ़ते भी। बुन्चे ने अपने अभिकर्ता (एजेंट) स्वामी को अपनी मेहनत सूझ-बूझ और निष्ठा से इतना प्रभावित कर लिया था कि वह उन्हें अपना ही मानने लगा था। उसने कई बार बुन्चे को पढ़ने-लिखने के मामलों में सहायता दी।

धीरे-धीरे कमाते खाते और पढ़ते हुए अनाथ किशोर बुन्चे आगे बढ़ने लगे। नीग्रो लोगों के बच्चों के लिए सरकार द्वारा खोली गई पाठशाला में उन्होंने अध्ययन किया तथा प्राथमिक और माध्यमिक परीक्षाएँ पास करके जैसे-जैसे वे आगे की कक्षाओं में बढ़ते गए उन्हें अधिक पैसों, अधिक समय अध्ययन के लिए और अधिक श्रम की जरूरत पड़ी। दिन तो चौबीस की बजाए छब्बीस घंटों का नहीं किया जा सकता था। उन्होंने और भी अधिक लगन व श्रम से काम करना

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आरंभ कर दिया। अभिकर्त्ता स्वामी ने भी पारिश्रमिक थोड़ा बढ़ा दिया और बुन्चे ने अपनी नींद के घंटे कम कर लिए। उन्होंने स्वास्थ्य रक्षा के लिए भोजन को न केवल सरलतम बना लिया वरन मात्रा भी कम कर ली। इस प्रकार उनकी विद्या साधना आगे बढ़ने लगी।

माध्यमिक कक्षाएँ उत्तीर्ण कर उन्होंने महाविद्यालयीन कक्षाओं में प्रवेश लिया। पूर्वोक्त पद्धति से इस कार्य के लिए और अधिक समय बचाकर लगाने लगे। उनका एक ही लक्ष्य था—शिक्षा का, एक ही जीवनोद्देश्य था—जनसेवा और एक ही पद्धति थी—पुरुषार्थ। इस कष्ट साधना और तपश्चर्या ने अपना परिणाम प्रस्तुत किया। उन्होंने ग्रेजुएट की परीक्षा पास कर ली।

एक दिन उनसे उनके मालिक ने कहा। तब वे ग्रेजुएट हो चुके थे—'बच्चे! अब तो तुम्हारी तपस्या और साधना पूरी हो गई। मैं चाहता हूँ कि तुम किसी सरकारी पद के लिए आवेदन करो। मैं इसके लिए तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ।'

'क्या कहा नौकरी! और वह भी अभी से बुन्चे ने बड़े आश्चर्य से कहा। नौकरी करने के लिए उन्हें कोई आकांक्षा ही नहीं थी। ग्रेजुएट हो जाने के बाद भी मेरी साधना पूरी नहीं हो गई है। अभी तो मुझे और आगे बढ़ना है।'

उसी श्रम, लगन और पुरुषार्थ से उन्होंने आगे पढ़ाई जारी रखी और एम० ए० पास किया। तदुपरांत उन्होंने राजनीति पर एक थीसिस लिखी और डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्ति की। जब वे बुन्चे से डॉक्टर एफ० बुन्चे बन गए। एक नीग्रो युवक को सफलता और प्रगति के इस स्तर पर पहुँचा देखकर अधिकारी और प्रबुद्ध व्यक्तियों की वह धारणा बदली जो उन्होंने मान रखी थी कि नीग्रो केवल गुलाम रखी जा सकने योग्य ही कौम है। बुद्धि सूझबूझ और प्रतिभा के क्षेत्र में इस कौम के व्यक्तियों का कतई प्रवेश नहीं है। बात यों सच भी प्रतीत होती थी। अब तक किसी भी नीग्रो व्यक्ति ने दासता के कारण इस क्षेत्र में कोई उल्लेखनीय प्रगति की भी नहीं थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लेकिन अवसर मिलते ही डॉ० बुन्चे ने उस भ्रांत धारणा को तोड़कर रख दिया तथा प्रतिभा, लग्न व बुद्धिमत्ता में असाधारण योग्यता और विकास का उदाहरण दिया। सरकार ने उनकी प्रतिभा का लाभ उठाना चाहा तथा उन्हें प्रशासन विभाग में एक महत्त्वपूर्ण पद पर नियुक्त किया। इस पद पर रहकर उन्होंने सिद्ध कर दिया कि वे किसी भी गोरे अधिकारी से कम योग्य और कम कुशल नहीं हैं। उनकी परिश्रमशीलता और कार्य दक्षता से प्रभावित होकर सरकार ने उन्हें एक के बाद एक दायित्व सौपें, जो बुन्चे ने बड़ी कुशलता से पूरा किया।

वे औपनिवेशक मामलों के विशेषज्ञ, सैनिक सूचना कार्यालय के प्रधान पदाधिकारी और विदेश विभाग ने एडवाईजर भी नियुक्त हुए। बाद में वे विदेश सचिव भी बने। इन पदों पर रहते हुए भी उन्हें अपने माता-पिता का अंतिम आदेश विस्मरण नहीं हुआ था। वे निरंतर अपने प्रभाव और वर्चस्व का उपयोग कर नीग्रो जनता की दशा सुधारने का प्रयास करते रहे। इसके लिए उन्होंने कई योजनाएँ बनाईं तथा उन्हें क्रियान्वित किया, अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में विश्व भर के राष्ट्रों को समीप लाने, उन्हें परस्पर सहयोगी तथा सद्भावना पैदा करने के शांति प्रयासों के लिए नोबुल पुरस्कार भी दिया गया। अरब और इजराइल की समस्या का समाधान ढूँढ़ने के लिए भी उनके प्रयासों को स्मरण किया जाता है। ❐

नीचे से ऊपर बढ़ने वाले- श्री एच० जी० वेल्स

आगे बढ़ने की अदम्य आकांक्षा आंतरिक उत्साह, ध्येय के प्रति अविचल निष्ठा मनुष्य को क्या बना डालते हैं। इसका एक प्रत्यक्ष उदाहरण देखिए।

एक कपड़े की दुकान। मालिक जोर से डाँट रहा है "जल्दी करो भाई! ग्राहक चला जाएगा तब कपड़ा निकालकर दोगे क्या?"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और छोटी उम्र का एक लड़का, जो उस दुकान का नौकर है जो शीघ्रता से कपड़े का थान निकाल कर दे रहा है। हाथ काम में लगे हैं दिमाग दुकान के मालिक की डाँट के प्रति सजग है—और मन उड़ रहा है किसी ऐसे लोक की कल्पना में जहाँ यह दासता, यह ताबेदारी, यह परवशता न होगी।

किंतु परवशता से छुटकारा कैसे पाया जाए? मन को ऊँचा उठाने, आगे बढ़ने की कुछ बनने की कामनाओं को कैसे पूरा किया जाए? प्रत्येक वस्तु के लिए पैसा चाहिए तब कहीं आवश्यक साधन सुविधाएँ जुट पाते हैं।

लेकिन वह लड़का सोचता है, मेरी माँ तो गरीब है, गरीब न होती तो मुझे थोड़े से पैसों के लिए इस उम्र में ऐसी नौकरी क्यों करनी पड़ती? लेकिन फिर भी मेरी महत्त्वाकांक्षाएँ अडिग हैं। मुझे ऊँचा उठना है। आगे बढ़ना है। सारी जिंदगी यों ही दासता नहीं करनी है। साधन नहीं है तो उन्हें जुटाऊँगा। कठिन से कठिन श्रम करूँगा। अपने ध्येय को प्राप्त करने के लिए जो भी कठिनाइयाँ सामने आएँगी उन्हें पराजित करूँगा और दुनियाँ को दिखा दूँगा कि भाग्य नहीं मनुष्य की कर्मनिष्ठा बड़ी है।

बस किशोर का संकल्प प्रबल हुआ, और उसने निश्चित दिशा में प्रयत्न प्रारंभ कर दिए। उसके हृदय में एक ऐसा व्यक्ति बनने की महत्त्वाकांक्षा थी जो संसार प्रसिद्ध हो, जिसे सब आदर तथा श्रद्धा के साथ स्मरण करें और जो काल के भाल पर अपने अमिट पदचिह्न छोड़ जाए।

और इस सबके लिए उसे सबसे अधिक भाया एक लेखक का व्यक्तित्व। तब उसने इसी दिशा में अपने सारे प्रयत्न, अपनी समस्त गतिविधियाँ मोड़ दीं।

सुबह से शाम तक दुकान पर काम करता वह। रात को छुट्टी पाता तो घर आकर पढ़ना प्रारंभ कर देता। गए रात तक उसका

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अध्ययन चलता रहता। प्रातः भी दुकान जाने का समय होने तक वह थोड़ा-सा समय अपने अध्ययन के लिए निकाल लेता और रात के पढ़े हुए अंश की पुनरावृत्ति हो जाती।

कुछ दिन में यह हाल हो गया कि पुस्तकें दुकान पर भी साथ जाने लगीं और जितने समय कोई ग्राहक न आता उतने समय उसका अध्ययन चलता रहता। उसकी निष्ठा को देखकर मालिक भी कुछ न कहता।

लिखने के लिए पहले पढ़ना—देश-ज्ञान बढ़ाना आवश्यक था। सो प्रथम प्रक्रिया पूर्ण हुई। अब उसने लेखन भी धीरे-धीरे प्रारंभ किया। पहले छोटे-छोटे लेख लिखे। अपने आप लिखता, फिर काटता, फिर लिखता। जब तक पूरा संतोष न हो जाता कि यह प्रत्येक दृष्टि से उत्कृष्ट हो गया है। तब तक उसे सँवारता ही रहता।

कभी निर्देशन की भी आवश्यकता पड़ती, तो वह साभार परिचित लोगों के पास जाता और अपनी समस्या का समाधान कर लेता।

जो भी इसकी गहन निष्ठा, प्रबल प्रयासों तथा अटूट लगन को देखता वही इसके प्रति सहानुभूति प्रकट करता और भरसक सहायता के लिए तैयार हो जाता। लायब्रेरी से पुस्तकें लाकर पढ़ीं। कुछ परिचित लोगों की सहायता से प्राप्त कीं। अधिकतर उसने सामयिक उपन्यासों का ही अध्ययन किया जिसके फलस्वरूप जीवन का एक दर्शन उसके सामने आया और मानव का मनोवैज्ञानिक स्वरूप।

धीरे-धीरे लेखों से कहानियाँ लिखनी प्रारंभ कीं। लिखते-लिखते जब उसे पूर्ण विश्वास हो गया कि अब मेरी कहानियाँ लोगों को मनोरंजन एवं उल्लास देने के साथ उन्हें जीवन में एक दिशा देने में भी पूर्ण समर्थ हैं तब उसने कहानियों का प्रकाशन भी प्रारंभ कर दिया। जनता में उसकी कहानियों का भरपूर स्वागत हुआ। वे लोगों को इतनी प्रिय लगीं कि उसे कहानी लेखन का कार्य बढ़ाना आवश्यक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हो गया। जनता में उसकी कहानियों की धूम मच गई, लोग मुक्त कंठ से उसकी सराहना करने लगे।

लोगों ने सराहना की, तो उत्साह और बढ़ा। मानसिक शक्तियाँ दुगनी हो गईं। पत्र-पत्रिकाओं में भी देना प्रारंभ किया। इससे उसका व्यक्तित्व प्रकाश में आया, लोगों ने उत्साहित भी किया। प्रेरणा तथा प्रशंसा दोनों में ही अपार जीवनी शक्ति होती है। व्यक्तित्व के विकास में ये ऐसे ही कार्य करती हैं, जैसे पौधे के विकास में जल तथा प्रकाश।

अब तक विचारों में भी परिपक्वता आ गई थी और कलम में प्रौढ़ता। अब जो उपन्यास लिखना प्रारंभ किया तो उसमें भी आशातीत सफलता प्राप्त हुई।

गरीबी अपने आप में एक ऐसी शिक्षिका है जो न जाने क्या-क्या सिखा देती है, न जाने कितना ज्ञान भर देती है जीवन में। इस युवक ने भी गरीबी की पाठशाला में जिंदगी की किताब पढ़ी थी, सो लेखों तथा उपन्यासों में वह मार्मिकता रहती कि छपते ही हाथों हाथ बिकते। लोग पढ़ते, पसंद करते और सराहते।

एक लेखक के रूप में ख्याति प्राप्त करने का उस बालक का स्वप्न आयु के साथ बढ़ा, विकसित हुआ और आयु के साथ ही सफल हुआ युवा तथा प्रौढ़ होता गया।

अपने अदम्य साहस, प्रबल मनोकामना, महत्त्वाकांक्षा, लगन, उत्साह, कठिन श्रम तथा आत्मविश्वास के बल पर ही यह व्यक्ति सफलता अर्जित कर सका। ये सब गुण हों, तो कोई भी मनुष्य प्रयास करके अपना अभीष्ट पा सकता है, आगे बढ़ सकता है, उन्नति के शिखर पर पहुँच सकता है, इसी महान लेखक की तरह जिसका नाम था—श्री एच० जी० वेल्स। जो कि विश्व की साहित्यिक विभूतियों में एक ऐतिहासिक व्यक्ति है। ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मजदूर से डॉक्टर बने—शरण प्रसाद जी

''डॉ० शरण प्रसाद कहाँ हैं?'' बंबई से आए हुए मेहमानों ने उरली कांचन के प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र के किसी कोने में लकड़ी फाड़ने वाले एक भाई से पूछा। दोपहर के बारह बज रहे थे, ऊपर आसमान से आग बरस रही थी, और लकड़ी फाड़ने वाले भाई के शरीर से पसीने की धाराएँ बह रही थीं।

''डॉक्टर साहब? वे तो आपको थोड़ी देर के बाद मिलेंगे।'' कहकर उसने अपनी कुल्हाड़ी लकड़ी पर वार करने के लिए उठाई।

कुछ देर बाद मेहमानों ने ऑफिस में जाकर देखा, तो वे दंग रह गए। लकड़ी फाड़ने वाला मजदूर ही डॉक्टर की कुर्सी पर बैठकर मरीजों को जाँच रहा था। वह मजदूर तो जवाब देने में उदासीन लगता था, यह डॉक्टर तो बड़े प्रेम से, धीरज से दर्दों की बारीकी से जानकारी हासिल कर रहा था।

शरणप्रसाद जी ने अपनी पचास वर्ष की आयु में अनेक भूमिकाएँ अदा कीं। मजदूर की, डॉक्टर की भूमिकाएँ तो अनेकों में से एक थीं। बड़ी दिलचस्प है उनकी यह कहानी। बाहर से रूखे-सूखे दीखने वाले शरण प्रसाद जी अनेकों के काकाजी अंदर से कितने सरस हैं, यह तो उनके हृदय के दरवाजे के अंदर घुसने की हिम्मत करने वाला ही जान सकता है।

वे इस दुनिया में अकेले नहीं आए। आए तो अपने एक जुड़वा भाई के साथ। जन्म पाया एक माँ से, पर दूध पिया दूसरी माँ का। उस दूध पिलाने वाली धात्री ने सिर्फ शरीर को ही सुदृढ़, सुगठित, सबल नहीं बनाया, उनके हृदय को प्यास से भरकर एक अनोखा संबल बाँध दिया।

मध्यप्रदेश के रायपुर क्षेत्र के एक जमींदार के घर शरणप्रसाद जी का जन्म हुआ। पिताजी स्वतंत्रता-संग्राम के सैनिक थे। अपने बच्चों को सर्वोत्तम संस्कार दिलाने के लिए उत्सुक थे। राजर्षि टंडन जी का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आश्रम नजदीक ही था। इसलिए इस लव-कुश की जोड़ी को आश्रम के निमित्त अँग्रेजों के जमाने में भी वैदिक काल की सर्वांगीण शिक्षा मिली, परंतु भाग्य जीवन को केवल साधन संपन्न ही बनाना नहीं चाहता था, सुंदर, सरस, सकलांग संपूर्ण बनाना चाहता था। स्वराज्य का आवाहन हुआ, टंडन जी का आश्रम से जेल में स्थानांतरण हुआ और घटनाचक्र शरणजी को भी राजर्षि के चरणों के समीप ले आया। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के शांतिनिकेतन के जीवन की अनेक अनपेक्षित, अनजानी, अनदेखी, अनसुनी क्षितिजें खुली कर दीं और भाग्य विधाता ने भर-भरकर देने के लिए अपना आँचल खोल दिया।

कला, संगीत, माधुर्य और सौंदर्य से जीवन कली परितुष्ट, परिपुष्ट होती गई। जीवन-कवि का ही प्रत्यक्ष सान्निध्य था, फिर भला जीवन-पुष्प कैसे नहीं खिल उठता। शिक्षण नामक कोई अलग कमरा ही नहीं था। न स्थल का और न काल का। एक अनोखी दुनिया थी वह। समूचे संसार का और समूचे जीवन का रस, आनंद और सौंदर्य मानो बच्चों की हँसी में प्रतिविंबित होता था।

जीवन किशोरावस्था और युवावस्था के बीच की देहरी पर आकर खड़ा था। जीवन के अनेक उत्तुंग शिखर आवाहन दे रहे थे। यौवन के पंख फूटने लगे थे। एक ओर परतंत्र भारत को स्वतंत्र कराने की हविश थी तो दूसरी ओर भूखे भारत का पेट भरने का कर्तव्य था। और इन सबके अतिरिक्त एक अगम्य और अदम्य आकर्षण भी था किसी अदृष्ट, अज्ञात, अरूप और अश्रुत का। इन सबके आवागमन के बीच किसी दिन एक दरवाजे पर अनुराग की आहट सुनाई दी और तब देखा कि दूसरे दरवाजे से वैराग्य ने प्रवेश कर ही लिया था। फिर भी वह जीवनधर्मी था। जीवन से जन्मा अनुराग, उसका इंकार भी क्यों? रूपांतर क्यों नहीं? वैराग्य को ही अधिक संपन्न बनाने में वह अनुराग सफल रहा।

अभ्यास काल पूरा हुआ और फिर चली जीवन-यात्रा। बिना जेल-यात्रा उस समय सच्ची यात्रा पूरी ही कहाँ होती थी। सत्याग्रह

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किया, जेल गए। अनेक कहानियाँ, अनेक अनुभव जीवन संपन्न होता चला, अंतर्मुखता बढ़ती ही चली।

स्वराज्य आ चुका था। अब कमाने में, घर-गृहस्थी चलाने में क्या हर्ज? विरोध, संघर्ष और चुपचाप गृहत्याग। उस समय तो गाँधी जी का सेवाग्राम ही सेवा की मंजिल थी। परंतु सर्वथा अपरिचित, अनुभवी लड़का। इधर-से-उधर, उधर-से-इधर भटकता रहा। आखिर पेट ने विद्रोह किया। वर्धा में ही किसी सिनेमा में नौकरी ढूँढ़ ली। स्वावलंबी जीवन का आरंभ अँधेरी चार दीवारी के बीच सिनेमा गृह में हुआ। रात में उसके प्रांगढ़ में ही किसी बेंच पर सो जाना और दिन भर काम करना। इसी बीच एक गन्ने का रस निकालने वाले का ध्यान इस तगड़े कार्यरत जवान की ओर गया और दो बार भोजन और कपड़े के बदले में दिन भर मजदूरी करना शुरु हो गया। बाहर गन्ने का रस निकालने की मशीन चलाना और अंदर घर में जो भी काम दिया जाए, वह करना। मालकिन को ऐसा अच्छा आज्ञाकारी नौकर आज तक नहीं मिला था। सौभाग्य से कभी अच्छा खाना भी मिल जाता था।

लेकिन यह तो बीच का प्रश्न था। अनुकूलता मिलते ही वर्धा की मगनवाड़ी ग्रामोद्योग केंद्र में प्रवेश मिला और फिर ग्राम-सेवक तालीम-वर्ग का कार्य। बाद में ग्राम-सेवा का भार उठाया। इसी बीच विनोबा जी के लघु भ्राता पूज्य बालकोबाजी से परिचय हुआ। और इन्हें उरली कांचन के प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र में रखा गया।

वहाँ भी काम तो यही सब। आरंभ भोजनालय से हुआ, यहाँ भी मजदूरी नहीं, कारीगरी बल्कि कलागीरी होने लगी और वे खुद भी नहीं जान पाए कि मरीजों के लिए खाना पकाते-पकाते वे अनेक रोगों के चिकित्सक कब और कैसे बन गए। इनके एक बड़े भाई डॉक्टर थे। उनकी पत्नी अपने देवर से हमेशा कहती—"देखो भैय्या, और चाहे जो बनना, लेकिन डॉक्टर कभी न बनना।" परंतु इनके भाग्य में तो डॉक्टरी ही लिखी थी।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

यह तो था प्राकृतिक चिकित्सा का क्षेत्र। बिना जोता हुआ खेत। किंतु अनेक नए प्रयोगों और संसाधनों का अभाव था। बालकोबाजी जैसे भक्त हृदयी कर्मयोगी का मार्गदर्शन था। क्षण की भी असावधानी बिन देखी नहीं की जाती थी। दिन के पीछे रात, रात के पीछे दिन— बरसों पर बरसों बीतते ही गए। अनेक नए रोग, नए उपचार, नया संशोधन। उपचार में उपवास का आरंभ उन्होंने ही कराया। तब तक रसाहार का उपचार ही दिया जाता था। नए क्षेत्र में पदार्पण था, फिर भी सिद्धि मिलती गई। लेकिन इस साधक को सिद्धि या प्रसिद्धि की अपेक्षा ज्यादा मतलब शुद्धि से ही था।

साल पर साल बीते। रोगी को योगी बनाकर भेजने का विनोबा का संदेश था। रोगी से निरोगी और निरोगी से योगी बनाने की प्रक्रिया प्रयोगी को करनी थी। आरंभ अपने से ही आवश्यक था। साधना चलती चली।

आखिर वह भी एक संस्था थी। संस्था की भी अपनी मर्यादाएँ रहती हैं। उधर संन्यस्तवृत्ति संस्था से मुक्त होने को मजबूर कर रही थी, इधर गुरुजन, स्नेहीगण उरुली न छोड़ने का प्रेमाग्रह कर रहे थे। आखिर दूसरे चिकित्सक को तैयार करके साल में एकाध महीना उरुली कांचन के लिए देने का वादा किया, तब कहीं इजाजत मिली।

अब इनकी परिव्रज्या चलती है। किसी परिवार या संस्था से वे बँधे हुए नहीं हैं। फिर भी उनके अनेक परिवार और संस्थाएँ हैं, जहाँ उन्हें सिर्फ रहने के लिए भी जाना पड़ता है। जहाँ भी रहते हैं, वहाँ लकड़ी फाड़ने का क्रम जारी रहता है। प्राकृतिक उपचार भी चलते हैं। सेवा भी चलती है और सत्संग तो चलता ही रहता है। मरीज डॉक्टर आने के एकाध घंटे पहले ही हाजिर हो जाता है, डॉक्टर की राह देखता रहता है कि शारीरिक, मानसिक व आत्मिक शांति कैसे पाई जाए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

किसी बीज को अनुकूल जमीन, खाद, पानी, प्रकाश, हवा प्राप्त हुई और उस बीज में से जो फूल खिला, उसे देखकर मन प्रसन्न हो जाता है। वैसे ही डॉ० शरणप्रसाद जी के व्यक्तित्व और व्यवहार को देखकर मन आनंदित होता है और प्रार्थना से भर जाता है ऐसे सौ-सौ गुलाब खिलें। ❐

बुद्धि—संसार का सर्वोपरि बल

यूनान के बाजार में एक स्वामी अपने तीन गुलामों को बेचने के लिए खड़ा था। बड़ी देर तक खड़ा रहा। तीनों गुलामों का एक भी ग्राहक न मिल सका। उनमें एक तो अत्यंत कुरूप और क्षीणकाय था अन्य दो भी ढीठ और काम चोर मालूम होते थे। शायद इसी कारण उनके भाव तक पूछने कोई ग्राहक नहीं आया।

ऊबकर मालिक ने इनकी कीमत भी कम कर दी। शाम होते-होते एक वृद्ध दार्शनिक सस्ते माल की खोज में आया। भाव-ताव करके दामों की योग्यता परखने के लिए उसने प्रश्न किया—'तुम लोग कौन-कौन से काम कर सकते हो।'———

एक दास ने रटा-रटाया उत्तर दिया—'मैं कोई भी काम कर सकता हूँ।' दूसरे ने कहा—'मैं सब कुछ कर सकता हूँ।'

क्षीणकाय और कुरूप दास का क्रम आया तो उसने बताया—'मालिक! मेरे साथियों में से एक कुछ भी काम कर सकता है और दूसरे में सब कुछ कर लेने की क्षमता है तो आप सोचिए मेरे लिए रह ही क्या जाता है।'

वह दार्शनिक ग्राहक तीसरे दास का उत्तर सुनकर बहुत प्रसन्न हुआ और उसे खरीद लिया। मालिक के साथ उसने प्रवेश भी नहीं किया था कि मालकिन दूर से ही देखकर जल उठी। अपने पति को तेज आवाज में चिल्लाकर कहा—'क्या पूरे मेले के सभी दास मर गए थे, जो इस काले कुरूप जानवर को खरीद लाए हो। जाओ इसे अभी वापस करो। मैं इसे अपने घर में नहीं रखूँगी।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मालिक ने गुलाम के पास जाकर कहा—'अब इस घर में रह सकना तुम्हारी इस योग्यता पर निर्भर है कि तुम मालकिन को प्रसन्न कर लो। मैं तुम्हें अपने पास से अलग करना नहीं चाहता हूँ।' गुलाम ने बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा—'स्वामी! आप इसकी चिंता न करें, मैं अपनी सेवाओं से मालकिन को इतना प्रसन्न कर लूँगा कि यदि आप भी मुझे बेचना चाहें तो वे बेचने नहीं देंगी।'

गुलाम ने अपने आश्वासन को प्रत्यक्ष कर दिखाया। उसकी सेवाओं से मालकिन प्रसन्न रहने लगी और उससे उसे बड़ी सुविधाएँ मिल गईं और यहीं रहकर उसने पढ़ना-लिखना सीख लिया।

उस गुलाम का स्वामी विद्वान होने के कारण राजसभा में भी आया जाया करता था। वहाँ उसका अच्छा सम्मान था। मनोविनोद के लिए राजा तब अपने दरबारियों से बड़े अटपटे प्रश्न पूछा करते थे।

इस प्रकार एक बार राजा ने एक जटिल प्रश्न पूछा। जिसका सही उत्तर कोई न दे सका। वह दार्शनिक विद्वान जब अपनी पत्नी से इस विषय में चर्चा कर रहा था तो गुलाम भी वहीं मौजूद था उसने ऐसा उत्तर दिया जो बिल्कुल प्रामाणिक और सही था। स्वामी उसे राज दरबार में ले गया और राजा भी उसके उत्तर से संतुष्ट हुआ।

काले कुरूप, क्षीणकाय इस बुद्धिमान गुलाम का परिचय पूछा तो बताया गया कि—यह वही ईसप है जिसकी कहानियाँ बच्चों को शिक्षित और सभ्य बना रही हैं। राजा ईसप का उत्तर सुनकर बेहद प्रसन्न हुआ और उसे दासता से मुक्त कर अपना सभासद बना लिया। ईसप अपने बुद्धि कौशल के बल पर सर्वाधिक सम्मान अर्जित करने लगा। बिकने और खरीदे जाने वाले पशुवत जीवन से ऊपर उठकर ईसप एकदम प्रतिष्ठित व्यक्ति बन गया। किंतु उसका यही विकास क्रम अन्य सभासदों की ईर्ष्या का कारण होकर उसके प्राणों का ग्राहक बन गया।

ईसप अपने गुलामी के दिनों में भी कभी असंतुष्ट और खिन्न नहीं हुआ था। संघर्ष और बुद्धिमत्ता के फलस्वरूप जब उसके दिन

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पलट गए और जब उसे दूसरों की घात वृत्ति तथा अनिष्ट चेष्टाओं का आभास हुआ तो भी वह तनिक-सा उदास न हुआ। वह जब गुलाम था उसने कभी भी अपनी स्थिति का रोना नहीं रोया। उसमें अपने आपको बड़ा ही शिष्ट और सामंजस्यपूर्ण बना लिया था। गुलाम होकर भी वह अपने स्वामियों के साथ अत्यंत सभ्यता और शालीनता का व्यवहार करता। सौंपा गया काम पूरी दक्षता और मनोयोग के साथ अपनत्व की भावना से करता। प्रतिकूल स्थिति गुणवान की प्रतिभा को छिपाने की अपेक्षा उसमें और अधिक निखार लाती है।

यद्यपि वह आरंभ से ही योग्य तथा अध्यवसायी था। लेकिन एक गुलाम माता-पिता के घर जन्म लेने के कारण उसे भी गुलाम बनना पड़ा। माँ-बाप के स्वामी ने इसी कारण उसे बेचकर पैसे खड़े कर लिए। कुरूप और दुबला पतला होने के कारण उसे कोई भी स्वामी अधिक दिनों तक अपने पास नहीं रखते। कुछ दिन काम लेकर उसे वापस बेच देते।

निरंतर परिवर्तित होने वाले स्वामियों के परिवार और वहाँ के अनुभवों के उसने कथानक बनाने शुरु कर दिए। जो बहुत ही मार्मिक और शिक्षाप्रद होते थे। अपनी कहानियों में पशु-पक्षियों को भी पात्रों के रूप में प्रस्तुत करने के कारण उसकी रचनाएँ बहुत ही रोचक तथा मनोरंजक होने लगीं। खाली समय में स्वामियों के बच्चे उसे घेरकर बैठ जाते और उससे कहानियाँ सुना करते, उसने सैकड़ों कहानियाँ रचीं जो उससे बच्चों तक, बच्चों से बड़ों तक और बड़ों से सारे यूनान भर में फैल गईं। विचारशीलता विवश जीवन में भी कई रास्ते खोज लेती है जो मनुष्य के व्यक्तित्व को विकसित कर उसे ऊँचा उठाती है।

सदाशयी अंतिम स्वामी के पास रहकर उसने पढ़ना-लिखना भी सीख ही लिया था और वहाँ से उसे राजा ने सभासद बना लिया तो उसने कहानियों को लिखित स्वरूप देना आरंभ किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका कथा साहित्य अपनी शिक्षण विशेषता के कारण सारे संसार में लोकप्रिय हो गया।

राज दरबार में ईसप की बढ़ती हुई प्रतिष्ठा के कारण दूसरे सभासद अपनी अवहेलना के भय से सदैव उसे नीचा दिखाने का अवसर ढूँढ़ा करते। एक बार यूनान पर लीडिया के सम्राट् क्रूसस ने आक्रमण कर दिया। आक्रमण बड़ा जबरदस्त था यूनान की सेना के पाँव उखड़ने लगे। संधि के सिवाय कोई दूसरा रास्ता नहीं था। प्रस्ताव रखा गया और लीडिया का सम्राट् क्रूसस संधि वार्ता को तैयार हो गया। अब प्रश्न कि वार्ता करने कौन जाए? यह संधि प्रकारांतर से पराजय ही थी और क्रूसस जो भी शर्त रखता उसे मानना ही पड़ता, इसके अलावा कोई दूसरा चारा भी नहीं। शर्तें अस्वीकार करने का तात्पर्य था बातों की असफलता और फिर वही आक्रमण, रक्तपात तथा युद्ध प्रतिनिधि असफल होकर आए तो राजा का कोप भाजन बनना पड़ता। उस कारण वार्ता के लिए जाने को कोई तैयार न हुआ। ईसप से ईर्ष्या रखने वाले राज दरबारियों ने इस अवसर को बड़ा ही उपयुक्त समझा और ईसप को भेजने की सलाह दी।

उसे क्रूसस के दरबार में भेजा गया। जब वह दरबार में पहुँचा तो उसका कुरूप मुँह देखकर दरबारियों ने घृणा से मुँह फेर लिया। ईसप निराश न हुआ। राजा भी ईसप के चेहरे से दृष्टि हटाकर अलग देखने लगा था। ईसप ने कहा—श्रीमान मेरा कुरूप मुँह न देखें। परंतु हृदय को स्पर्श करने वाली एक कहानी इसी प्रकार मुँह फेरे-फेरे ही सुन लें। क्रूसस को जिज्ञासा हुई। उसने ऐसी अनेकों संधि वार्ताएँ देखी थीं और उनमें भाग लिया था, परंतु आज तक किसी प्रतिपक्षी ने कहानी तो क्या किसी प्रकार की घटना तक का उल्लेख नहीं किया था। ईसप द्वारा कहानी सुनाने की इच्छा व्यक्त करने पर क्रूसस को आश्चर्य हुआ और उसने कौतूहलवश उसे स्वीकृति दे दी। ईसप ने एक बहुत ही मार्मिक और करुण

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कथा सुनाई, जिसमें किसी दूसरे को अपने आधीन रखने की वृत्ति का अनौचित्य प्रतिपादित किया गया था। कहानी कहने का ढंग इतना प्रभावोत्पादक था कि क्रूसस का हृदय दहल उठा और वह यूनान को स्वतंत्र करके चला गया।

इसकी इस सफलता पर यूनान का राजा बहुत प्रसन्न हुआ। राज दरबार में उसकी प्रतिष्ठा कई गुनी बढ़ गई। परंतु ईर्ष्यालु दरबारियों के कलेजे पर साँप लोट गया। उसके विरोध में वे तरह-तरह के षड्यंत्रों की योजनाएँ बनाने लगे।

एक दिन ईसप कहीं गया हुआ था। दरबारियों ने उनके सामान में चुपके से राजा की कोई बहुमूल्य वस्तु छुपाकर रख दी। जब उस वस्तु की तलाश हुई और कहीं नहीं मिली तो षड्यंत्रकारी दरबारियों ने ईसप पर संदेह व्यक्त किया और उसके सामान की तलाशी ली गई। वह बहुमूल्य चीज ईसप के पास पाई गई। उसने अपनी निर्दोषता बताई परंतु उसे प्रमाणित न कर सकने के कारण दरबारियों ने न्यायकर्त्ताओं पर अपने प्रभाव का उपयोग कर उसे मृत्यु दंड दिलवा दिया।

ईसह अपनी कहानियाँ, महान सद्गुणों और बुद्धि कौशल के बल पर आज भी अमर है। उसका जीवन बुद्धि बल के आधार पर असहाय विवश और लाचार जीवन को समर्थ, सम्मानित और प्रतिष्ठित व्यक्तित्व में बदल देने का अनुपम उदाहरण है। ❐

सद्गुणों के बल पर सफलता पाने वाले—साइमन

साइमन—अमेरिका के एक धन कुबेर का साधारण-सा मुनीम। बोलिविया में लापाज प्रांत में ऋण उगाहने की नौकरी थी। श्रमशीलता, दृढ़ संकल्प, सज्जनता और उदारता उसकी अमूल्य संपदा थी। भले ही वह ज्यादा पैसा नहीं कमा पाता हो परंतु जो मिलता उसे ही संतोष से पति-पत्नी खा लेते। वे गरीब थे परंतु उन दोनों में अटूट प्रेम था। देखने वाले कहते थे दोनों जन्म के साथी हैं। पत्नी भी अपने पति की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हर इच्छा को बिना कोई नुननच किए प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेती। उसे देखकर यही लगता कि अमेरिकी काया में किसी भारतीय नारी की आत्मा विराजमान है।

एक दिन मालिक ने साइमन को हिलोरियन आर्क नामक एक छोटी सी खदान के मालिक से ऋण वसूल करने के लिए भेजा। परिस्थितिवश आर्क समय पर पैसा चुका नहीं सका था। कर्ज था मात्र ६०० डॉलर। साइमन ने जरा जोर देकर आर्क से पैसे देने के लिए कहा तो वह बड़े ही करुण स्वर में बोला—'मैं सच कह रहा हूँ। इस समय मेरे पास एक कानी कौड़ी भी नहीं है। अभी मैं यह ऋण चुकाने में सर्वथा असमर्थ हूँ।'

इतने करुण स्वरों ने साइमन के संवेदनशील हृदय को उद्वेलित कर दिया। परंतु वह विवश था, कर भी क्या सकता था। वह बोला—'मैं तुम्हारी मजबूरी को अच्छी तरह जानता हूँ। किंतु मैं क्या कर सकता हूँ? तुम जानते ही हो आर्क कि मैं एक नौकर मात्र हूँ। मालिक की आज्ञा है कि आज पैसे लेकर लौटना अन्यथा वे कानून का सहारा लेंगे।'

आर्क जानता था कि साइमन वह बात केवल धमकी देने के लिए नहीं कह रहा है। वह गंभीर होकर बोला—'अच्छा तो फिर जैसी ईश्वर की इच्छा। मैं यह खदान ही तुम्हारे मालिक के नाम पर कर देता हूँ। उनसे कहना कि मुकदमा चलाना व्यर्थ है क्योंकि मेरे पास इस खदान के अलावा कुछ भी नहीं है। यही मेरी एकमात्र संपदा है।'

साइमन ने सोचा मालिक मुकदमा चलाएगा और उसे इस खदान के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इससे बेहतर है कि बिना मुकदमा चलाए ही खदान मालिक के अधिकार में आ जाए। इससे मनमुटाव भी नहीं होगा और स्थिति भी सँभल जाएगी। तुरंत साइमन ने आर्क से खान की रजिस्ट्री करवा ली।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

और अपने मालिक को यह शुभ संवाद देने के लिए रवाना हो गया। रास्ते में वह सोचता जा रहा था कि मालिक उसकी इस सफलता से बेहद खुश होंगे। ६०० डालर में भला कहीं कोई खान मिलती है। इस प्रकार अपने मालिक को अनेकों बार लाभ पहुँचाया था। इसी कार्य-कुशलता के कारण वह मालिक का प्रिय और प्रशंसा पात्र था। उसके सद्व्यवहार तथा आत्मीयता से भले-बुरे सभी प्रकार के आसामी खुश रहा करते थे।

रात बड़ी देर से वह अपने मालिक के बंगले पर पहुँचा। नौकरों को हिदायत दी गई थी कि साइमन के आते ही कार्यालय में भेज दिया जाए। वहाँ मालिक जाग रहा था। धनवानों को चैन की नींद आती ही कब है। ब्याज और हराम की कमाई खाने वाला दिन रात किसी उधेड़बुन में ही संलग्न रहता है। साइमन के कक्ष में प्रवेश करते ही उसने पूछा—'सफल रहे।'

'हाँ'—साइमन बोला—'आर्क की स्थिति बड़ी शोचनीय थी। उसने कर्ज के बदले अपनी खदान आपके नाम लिख दी है।'

मालिक आशा के विपरीत एकदम उबल पड़ा—'और तुम यह खुशखबरी मुझे सुनाने आए हो। कहीं तुम्हारी मति मारी तो नहीं गई थी, उस समय जब तुमने उसके प्रस्ताव को मान लिया। मुझसे बिना पूछे तुम्हें यह निर्णय लेने का अधिकार किसने दिया था?'

साइमन इस विपर्यय को देखकर भौंचक्का सा रह गया। फिर भी वह विनीत स्वरों में बोला—'परंतु मालिक इसमें हमारा कोई नुकसान नहीं है। हम मुकदमा भी चलाते तो उसके पास खान के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है। एक फूटी कौड़ी भी।'

'बेवकूफों जैसी बातें मत करो। कल तुम रुपयों के बदले मरा हुआ ढोर ही ले आओगे। आखिर उस खदान में से कौन से हीरे जवाहरात निकलते हैं। तुम्हें यह सौदा लाभप्रद लगता है तो ६०० डालर में तुम अपने नाम कर लो। मुझे तो पैसे से काम है।'

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साइमन और आश्चर्यचकित रह गया। छः सौ डॉलर का प्रबंध वह कहाँ से करेगा। सोचा—'मालिक से क्षमा माँग लूँ। परंतु मैंने अनुचित किया क्या है जो दया की भीख माँगू। उसने यह फैसला सहर्ष स्वीकार कर लिया। उसे स्वयं पर विश्वास था कि पैसों का प्रबंध वह कहीं से भी कर लेगा।'

मालिक ने दूसरा निर्णय सुनाया—''और हाँ मुझे अब तुम्हारी सेवाओं की आवश्यकता भी नहीं है।''

यह चुपचाप सुनकर साइमन चुपचाप बंगले से बाहर आ गया। इस नई अप्रत्याशित परिस्थिति में न तो वह घबराया और न ही उसे कोई चिंता हुई कि अब क्या होगा। आत्मविश्वास और स्वाभिमान की सबसे बड़ी उपलब्धि यही तो है। दूसरे दिन साइमन ने अपने एक संबंधी से ६०० डॉलर उधार लेकर मालिक को दे दिए तथा स्वयं पत्नी और दो नए नौकरों को लेकर खदान पर आकर रहने लगा।

पत्नी ने भी साइमन की कोई आलोचना नहीं की और न ही किसी प्रकार असंतोष व्यक्त किया। चारों मिलकर खदान पर काम करने लगे। उससे जो कुछ मिलता दोनों नौकरों का पारिश्रमिक चुकाने के बाद खाकर खुश रहते। हालाँकि उसे नौकरी छोड़ देने से कोई घाटा नहीं उठाना पड़ा उलटे वह स्वतंत्र हो गया। किसी का प्रतिबंध नहीं, किसी का दखल नहीं। पति-पत्नी दोनों पहले जिस प्रेम और आत्मीयता के अमृत से सिंचित रूखी सूखी खाते थे वही अमृत अब और भी मधुर हो गया था।

कहते हैं कष्ट कठिनाइयाँ मनुष्य के उज्ज्वल भविष्य का प्रवेशद्वार खोलने के लिए आया करती हैं। साइमन प्राणपण से अपने काम में जुटा रहता। एक दिन कुदाल चलाते-चलाते 'टन्न' की आवाज हुई। शायद किसी धातु से कुदाल टकराया था। साइमन ने मिट्टी हटाकर देखा बहुत-से चमकीले पत्थर चमक रहे थे। लगा कोई खजाना हाथ लग गया है। वह उन पत्थरों को लापाज के एक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इंजीनियर के पास ले गया। रासायनिक परीक्षण करने के बाद पता चला कि उस खदान में कीमती रांगा है। मिट्टी में रांगा ८ प्रतिशत था जो काफी माना जाता है। साइमन के भाग्य देवता जाग उठे।

अब वह और अधिक श्रम लगाकर काम करने लगा। सारे दिन खुदाई करता और जब माल काफी हो जाता तो उसे बेच देता। उसके जो दाम मिलते उससे आस-पास की भूमि भी खरीद लेता। मजदूरों की संख्या बढ़ा दी गई, सुविधाएँ और साधन भी निरंतर बढ़ने लगे। तीन वर्षों की अवधि में उसका कारोबार अच्छा चल निकला।

एक शोधक कंपनी का प्रतिनिधि गुगनहोम साइमन के पास आया और बोला—'इन खदानों की हम १५ लाख रु० कीमत दे सकते हैं।'

इतना पैसा पाकर आराम की जिंदगी बिताने की ललक सायमन में एक बार जगी परंतु पत्नी ने समझाया—'यह सौदा मत करो। यह कंपनी इस खान के १५ लाख रुपए दे रही है। इसका मतलब है कि हमारी खदान निश्चय ही १५ करोड़ की है।'

सौदा नहीं हो सका। तीन वर्ष और बीत गए। साइमन की संपदा बढ़ती गई कुछ ही दिनों में वह करोड़पति बन गया, तब गुगनहोम ने एक समझौता करने का प्रस्ताव रखा जिसके अनुसार साइमन को रांगे की खानों से लाभ अर्जित करने वाले एक ट्रस्ट का प्रधान बनाया गया। साइमन को ५१ प्रतिशत की साझेदारी दी गई और उत्पादन में सारी पूँजी दूसरे अमरीकियों ने लगाना स्वीकार किया। इस प्रस्ताव को स्वीकार करने से पूर्व भी साइमन ने अपनी पत्नी से विचार विमर्श किया। वह अब पूर्णतया सहमत थी।

साइमन अमेरिका का सबसे बड़ा खदान पति बन गया। तभी उसे हिलरिन आर्क की याद आई, जिसने ६०० डॉलर में वह खदान बेची थी। आर्क का पता लगवाया तो उसकी स्थिति बड़ी दयनीय थी फिर भी आर्क ने साइमन को बधाई दी। दोनों उसी आत्मीयता से मिले। साइमन को यह उचित लगा कि आर्क को खान की कमाई

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

का एक अंश नियमित रूप से दिया जाता रहे। इसे आर्क ने बहुत धन्यवाद देते हुए स्वीकार किया।

ट्रस्ट का प्रधान बन जाने के बाद साइमन ने कई व्यापारिक यात्राएँ कीं। वह अब साधारण नौकर से करोड़पति बन गया था, परंतु उसके व्यक्तित्व की विशेषताएँ ज्यों-की-त्यों विद्यमान थीं। वही दयालुता, वही उदारता, वही श्रमशीलता तथा लक्ष्य के प्रति उत्साह और धैर्यपूर्ण लगन।

एक बार साइमन से पुराना मालिक मिलने आया। वह उसी पुरानी स्थिति में पड़ा था। उसके सामने आकर पछताने लगा—'काश मैं तुम्हें नौकरी से नहीं निकालता और तुम्हारे सौदे को स्वीकार कर लेता।'

साइमन ने बड़े ही भोलेपन से कहा—'तो क्या हुआ। आप अब भी मेरे मालिक हैं चाहें तो पूरी खदान अपने कब्जे में ले सकते हैं।' और पूरा कमरा एक ठहाके से गूँज उठा। साइमन ने यह बात बिल्कुल निर्विकार भाव से कही थी परंतु धन लोलुप व्यक्ति सदैव इसी उपहासास्पद स्थिति के पात्र होते हैं।

साइमन ने सामाजिक उत्थान के कार्यों में भी काफी पैसा खर्च किया। वह विकास के जिस आकाश को छू गया उसके मूल में सद्गुणों की शक्ति है। साइमन यदि स्वाभिमानी नहीं होता, मेहनती नहीं होता, उदार नहीं होता तो सौभाग्य का द्वार उसके लिए सदैव ही बंद रहता। ❐

बुल्डरो विल्सन गुथरो—
वेदनाओं ने जिसे अमर संगीतकार बना दिया

अमेरिकन काँग्रेस के पुस्तकालय के लिए लोकसंगीत संग्रहीत करते हुए एलन लोमस्क की भेंट बुडरो विल्सन गुथरो नामक लोक संगीतज्ञ से हुई। बुडरो विल्सन गुथरो जिसे उसके मित्र 'वुडी' के अंतरंग संबोधन से संबोधित करते थे, अपने संगीत की रिकार्डिंग के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दौरान ऐलन लोमस्क के साथ रहा। इन दिनों भी वह फर्श पर ही सोता था। भोजन भी वहाँ खड़े ही किया करता। लोमस्क के आग्रहों को वह यही कहकर टाल देता था—"मैं राह चलता आदमी हूँ। अपने आपको नाजुक और सुविधा परस्त मैं नहीं बनाना चाहता।"

जिस व्यक्ति के ये शब्द हैं जिसके जीवन पर हालीवुड के फिल्म निर्माताओं ने फिल्म बनाई है। उसकी आत्मकथा अमेरिका की लोकप्रिय आत्मकथाओं में से एक मानी जाती है। नेशनल ब्राडकॉस्टिंग कंपनी ने उसके जीवन पर दो घंटे का टेलीविजन शो प्रस्तुत किया है। उसकी मृत्यु के उपरांत न्यूयार्क के कार्नेगी हाल में उसको श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए जो संगीत का कार्यक्रम रखा गया उस समय जनवरी की असह्य शीत भरी रात्रि में भी ३,००० श्रोताओं से हाल खचाखच भरा हुआ था। उस व्यक्ति के द्वारा लिपिबद्ध किया गया संगीत आज लाखों रुपया प्रतिवर्ष की आय देने वाला उद्योग बन गया है।

किंतु उस व्यक्ति का जीवन बहती सरिता, उलझती कूदती वायु और उड़ते-फिरते बादलों की तरह सर्वथा अकृत्रिम था। उसका संगीत प्रगति के दिव्य संदेश से अनुप्राणित था। वह कहा करता था—"मुझे उस संगीत से कतई लगाव नहीं है जो आपको यह सोचने पर विवश करे कि आप इस दुनिया में कुछ खोने के लिए आए हैं।" उसके इस कथन की पुष्टि उसका अपना संगीत करता है। उसके संगीत में जिस दिव्य आनंद की सृष्टि हुई है वह इस संसार के कण-कण में व्याप्त है, किंतु आत्म केंद्रित मनुष्य उसे सुन समझ नहीं पाता।

संगीत मनुष्य को सुख-दुःख से ऊपर उठाकर उसे एक ऐसी अलौकिक स्थिति में ले जाता है जहाँ वह अपने शरीर, मन और दैहिक अस्तित्व से ऊपर उठकर उसके अपने सच्चे स्वरूप का दिग्दर्शन करता है। यह विशुद्ध रूप से अनुभूति का विषय है। जिस संगीतकार के संगीत में यह उत्पन्न हो जाए, समझना चाहिए कि वह प्राणवान संगीतकार है। वुडी ऐसा ही लोक संगीतकार था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वुडरो विल्सन का जन्म १९१२ में औकेमाह प्रदेश के ओकला होमा ग्राम में हुआ था, जिसके लिए वह कहा करता था—संगीतकार व्यक्तियों द्वारा किए गए नृत्य, उपदेश, बातचीत, हास्य और क्रंदन में हमारा गाँव अपने क्षेत्र में सबसे ऊपर था। उसमें चारों ओर संगीत बिखरा रहता। वुडी ने बचपन में अपनी माता से ग्रामीण पीड़ा युक्त लोकगीत सीखे थे और अपने पिता से जो संपन्न भूमि विक्रेता थे, चार व्यक्तियों द्वारा मिलकर प्रस्तुत किए जाने वाले नृत्य के साथ चलने वाला संगीत और हर्ष पूर्ण लोकगीत सीखे थे। अपने पड़ोसी मोची से उसने गिटार पर धुनें निकालना सीखा था।

वुडी का पूरा जीवन विपदाओं भरा जीवन था। भाग्य उसके साथ सदा निर्दयता पूर्ण बरताव करता आया था, पर उसने कभी उससे हार नहीं मानीं, वरन एक बहादुर योद्धा की तरह वह उससे लड़ता ही रहा था। उसके जीवन का आरंभ दुखों से हुआ, मध्य दुखों के बीच गुजरा और अंत भी दुखों में ही हुआ, पर उसको किसी ने ईश्वर को कोसते या जीवन से बेजार होते नहीं देखा। वह सदा हँसते हुए इन्हें सहता रहा। इन आपदाओं को उसने अपना प्रशिक्षक मना लिया। उसके जीवन को एक नजर से देखा जाए तो उसे विख्यात और प्राणवान संगीतकार बनाने का आधे से अधिक श्रेय इन्हीं विपदाओं को जाता है।

बचपन में उसके साथ जो हादसा हुआ वह कुछ इसी प्रकार का था जैसा किन्हीं उपन्यासों में वर्णित होता है। थोड़े-थोड़े समय के अंतर में ही एक-से-एक भयंकर विपत्ति उसके परिवार पर आती गई। उसका एक पैतृक घर आग की भेंट हो गया। उसके थोड़े ही दिन बाद एक घर चक्रवात ने डहा दिया। फिर उसकी एक बहिन जलने के कारण मर गई। बहन का शोक भुला भी न पाए थे कि वुडी की माता एक रहस्यमय स्नायविक रोग से ग्रस्त हो चल बसी। रही सही कमी को पूरा कर दिया विश्वव्यापी महँगी ने—उसके पिता का

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दीवाला निकलवा दिया। वे इसी गम में बीमार होकर चल बसे। रह गया तेरह वर्ष का वुडी—अनाथ और बेसहारा। किंतु उसे सहारा दिया उसके संगीत ने।

उसका पढ़ना छूट गया। उसको अपने जीविकोपार्जन के लिए अखबार बेचने, कपास चुनने, कुएँ खोदने, दीवारों पर पुताई करने जैसे कई श्रमसाध्य कार्य करने पड़े। अब तक उसने जो पीड़ा झेली थी उसने उसके भीतर के प्रमुख संगीतकार को जगा दिया। वह सत्रह वर्ष की आयु में अपनी अभिन्न सहचरी—गिटार को लेकर घर से निकल पड़ा। उसके बाद उसका आधे से अधिक जीवन घूमने में व्यतीत हुआ।

जीविकोपार्जन के साथ-साथ उसने लोकसंगीत की अनमोल संपदा को एकत्रित करने का भी ध्येय बना लिया। पेट की आग उससे मजदूरी करवाती थी और आत्मा की हूक उसके संगीत में प्राण भरती थी। जो कुछ वह देखता, सुनता व अनुभव करता था उसे वह संगीत रूप में अभिव्यक्ति कर दिया करता था। प्रारंभिक आपदाओं ने उसे इस धरती पर बिखरे आनंद और संगीत की अनुभूति पाने की क्षमता उत्पन्न कर दी थी।

माँ प्रकृति ही उसकी संगीत शिक्षिका बनी। सूरज की पहली किरण के साथ उठने वाला चिड़ियाओं का कलरव, बसंत के आगमन के साथ ही गूँज उठने वाली पिक की स्वर लहरी, सागर तट पर उठने वाला लहरों का संगीत उसके संगीत में प्राण भरता था।

जहाँ काम मिलता वहाँ श्रम का काम करता। नहीं मिलता तो अपनी गिटार लेकर बजाने लगता, चाहे वह विस्थापितों की बस्ती हो या छोटा-सा किसानों का गाँव, संगीत की समाप्ति पर उसे कोई-न-कोई प्रशंसक मिल ही जाता। वही उसे अपना अतिथि बना लेता। इसी प्रकार घूमते हुए उसने एक हजार से भी अधिक गीतों की रचना की। ये ही गीत आगे चलकर सारे अमेरिका में विख्यात हुए अपनी मौलिकता और जीवंतता के कारण।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लॉस एंजिल्स के एक छोटे-से रेडियो स्टेशन पर उसे गाने का काम मिला। लोकसंगीत के जौहरी एलन लोमस्क ने इस हीरे को पहचाना। उसी वर्ष लोमस्क के कोलंबिया ब्राडकास्टिंग सिस्टम रेडियो शो पर उसे एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ।

उसे संगीत का जनक कहा जाता है। उसके समकालीन संगीतकार कोल पोर्टर व नीओल कोवार्ड उच्च वर्ग के लिए कृत्रिम गीत संगीत की रचना करने में लगे हुए थे, तभी सामान्य जनता के लिए वुडरो विल्सन गुथरो गीत संगीत की रचना कर रहा था जिसमें निसर्ग जनित प्राणतत्त्व विद्यमान था।

द्वितीय विश्व युद्ध का समय वुडरो विल्सन गुथरो के सृजन का स्वर्णकाल था। उसने मेरी नामक स्त्री से विवाह करके अपने यायावर जीवन को स्थिर जीवन में बदल दिया था। गिनबिच नामक एक गाँव के ठंडे मकान में उन्होंने अपनी गृहस्थी जमाई। यहीं उसने दर्जनों गीत रचे, समाचार पत्र के स्तंभ लेखन का काम लिया और अलमेनाक गायकों के दल के साथ गीत गाए। इसी काल में उसने अपनी आत्मकथा "बाउन्ड आफ ग्लोरी" लिखी जिसे न्यूयार्कटाइम्स ने श्रेष्ठतम पुस्तकों में से एक और जीवनियों में अद्वितीय पुस्तक माना। एक व्यक्ति जिसे तेरह वर्ष की आयु में पढ़ाई छोड़ देनी पड़ी हो और आजीविका के लिए गाँव-गाँव, नगर-नगर भटकना पड़ा हो, वह इतना अच्छा लेखक संगीतकार व गीतकार भी बन सकता है, यह तथ्य उनके जीवन में साकार होता देखा जा सकता है। निश्चय ही उसके इस निर्माण में उसकी प्रारंभिक विपत्तियों का बड़ा हाथ रहा था, जिनने उसे इतना संवेदनशील बना दिया था कि वह प्रकृति के और मानव समाज के हर क्रियाकलाप को एक कलाकार की दृष्टि से देख समझ सका और उसे गीत संगीत व लेखन में अभिव्यक्ति दे सका।

एक दिन जान स्टीनवेक नामक एक ख्यातिनामा उपन्यास की कृति पर आधारित चित्र 'पेन्स आफ वार्थ' देखकर लौटा तो घर आते

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ही वह टाइप राइटर पर बैठकर बड़ी तेजी से टाइप करने लगा। रात देर तक उसका टाइप राइटर खटखटाता रहा। सबेरे जब वह उठा तो उसके पास एक नई कृति सिरजी हुई रखी थी टाम जोड़ नामक वेल। उसके इस गीत को जान स्टीन बेक ने अपनी इस पुलिट्जर पुरस्कार प्राप्त पुस्तक से भी महत्त्वपूर्ण माना।

वुडी का सारा जीवन विपत्तियों से भरा था। उसने तीन-तीन विवाह किए पर अंतिम पत्नी को छोड़कर उसे कोई प्यार न दे सकी। उन दो के साथ उसका वैवाहिक जीवन कभी सुखी नहीं रहा। उसकी परिणति तलाक में हुई। अंतिम पत्नी मर जोरी जो स्वयं कलाकार थी उसे वह सेवा सहयोग दे सकी, पर इसी से उसके दुखों का अंत नहीं हो सका। उसकी एक पुत्री भी घर पर जलकर मर गई। एक पुत्र रेलगाड़ी के नीचे आकर समाप्त हो गया। ये विपत्तियाँ उसके भीतर बह रही संगीत की सरिता को सुखाने के लिए अपर्याप्त ही रही। संभवत: इस कलाकार का सिरजनहार उसे सुख-दु:ख से ऊपर उठाकर उस स्थिति तक ले जाना चाहता था कि वह अपने गीत-संगीत में वह अमरत्व भर सके जो सुनने वालों को उन्हीं स्थिति में पहुँचा दे, कुछ देर के लिए।

अपने जीवन के अंतिम दिनों में उसे भी वही रहस्यमय रोग हो गया जो उसकी माँ को हुआ था। उसका मानसिक संतुलन बिगड़ गया। सामान्य व्यक्ति जिसे सुख कहता है वह 'सुख' नाम की वस्तु वुडरो विल्सेन गुथरी को कभी नहीं मिल सकी। उसके पल्ले तो वेदना ही आई थी। पर इस वेदना से वह घबराया नहीं। वह ऐसे अमर संगीत की रचना कर गया जो मानव जाति की अमूल्य निधि है। आज वह इस दुनिया में नहीं है पर उसके द्वारा रचे गीत उसका दिया संगीत अमेरिकी जनमानस को भौतिक और यांत्रिक सभ्यता जनित तनाव से मुक्ति प्रदान कर रहा है। ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सब्जी बेचने से हिंदी-साहित्य-सम्मेलन के सभापतित्व तक

मुसीबत अकेली नहीं आती अपने बच्चे-बच्ची भी साथ लेकर आती है ताकि मनुष्य की पूरी तरह खबर ली जा सके। अमृतलाल चक्रवर्ती को १८८१ में इंटर की परीक्षा देनी थी, उसके पहले ही आपत्तियों ने परीक्षा लेनी आरंभ कर दी। सितंबर में पिताजी बीमार हुए। वे थोड़े दिन रोग भोगकर चल बसे। बीमारी फिर भी नहीं गई। उसने अमृतलाल को पकड़ लिया। विद्यालय के प्रधानाध्यापक ने दया करके गाँठ से खर्च के रुपए भेजकर परीक्षा देने बुलाया पर बीमारी ने पीछा नहीं छोड़ा।

अच्छे होकर नौकरी के लिए कलकत्ता आए। बहुत प्रयत्न करने पर भी नौकरी नहीं मिली। साथ जो खर्च के लिए रुपए लाए थे वे भी समाप्त हो गए। स्थिति भूखों मरने की आ पहुँची। अकेले होते तो ठीक, पर बचपन में ही विवाह करके पिता ने पत्नी का भार और लाद दिया था। बाल विवाह की कुरीति ने भारतीय समाज को कितना गया-गुजरा बना दिया था, उसे अनुभव कर वह युवक परेशान हो उठा। कितने ही युवक इस कुप्रथा के शिकार होकर आगे नहीं बढ़ सके थे। वह इन कठिनाइयों से पीछे हटने वालों में से नहीं था। उसने अपनी पत्नी के गले का हार बेचकर सब्जी बेचकर अपना खर्च चलाना आरंभ कर दिया। गाँव से पाँच मील दूर प्रति सप्ताह एक हाट लगाता था वहीं सब्जी बेचकर वह चार-पाँच रुपए कमा लेता।

उच्च कुल के युवक को इस प्रकार सब्जी का धंधा करते देखा तो जाति वालों ने टोका। उसे जाति से बाहर करने की धमकियाँ दी जाने लगीं। लोग कहते कुंजड़े का धंधा ही करना था तो पढ़-लिखकर समय को बरबाद क्यों किया? युवक भी चुप न रहता—पढ़े-लिखे लोगों का भूखों मरना क्या आपको अच्छा लगता है? इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रकार की हीन मान्यताओं ने ही तो हमारे समाज को पतन के गर्त में डुबाया है। धंधा और परिश्रम तो मनुष्य का धर्म है।

आपत्तिकालीन स्थिति की तरह अमृतलाल ने सब्जी बेचने का काम किया था, इसका अर्थ यह नहीं था कि वह इसी से संतुष्ट हो गया था। जब साठ-सत्तर रुपए इकट्ठा हो गए तो वह अपने परिवार के साथ गाजीपुर चला गया। वहाँ एक दुकानदार ने काम दिया। किंतु दुकानदार के व्यवहार से असंतुष्ट होकर रेलवे डिपार्टमेंट में सर्विस कर ली। वहाँ पर अफसर से झगड़ बैठा और नौकरी चली गई।

कष्ट और कठिनाइयाँ मनुष्य को बनाने के लिए आती हैं, जो इनसे लड़ता हुआ आगे बढ़ता जाता है प्रगति उसके कदम चूमती है। इन विषम अनुभवों में भी युवक हारा नहीं। उसने कानून पढ़ना आरंभ किया। पब्लिक प्रॉसीक्यूटर मि० हिल के यहाँ नौकरी भी करता और कानून पढ़ता। मि० हिल इसकी प्रगति से बहुत प्रसन्न हुए।

बचपन में ही अमृतलाल ने समाज की हीन दशा देखी थी। इसके पिता आनंद चक्रवर्ती पुराने ढर्रे के ब्राह्मण थे। घर की स्थिति ठीक न होने के कारण उसे कभी मामा के यहाँ कभी भाई के यहाँ रहना पड़ा। समाज के विषम चित्र उनकी आँखों के सामने से गुजर चुके थे। कभी मौलवी के बेंत खाकर स्कूल छोड़ना पड़ा तो कभी ट्यूशन करके अपना खर्च चलाना पड़ा। सामाजिक कुप्रथा तथा राजनैतिक दासता के साथ-साथ अशिक्षा भारतीय जनता को दीन-हीन बनाए जा रही थी। उसके प्रति बचपन से ही बालक के मन में पीड़ा उमड़ने लगी थी। यहाँ जब वह 'प्रयाग-समाचार' के संपादक देवकी नंदन त्रिपाठी के संपर्क में आया तो यह पीड़ा लेखों के रूप में बह निकली। यहीं इसे हिंदू सभा में सम्मिलित होने का अवसर मिला।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रगति करने के अवसर प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में आते हैं। जो उन अवसरों को परखना जानते हैं वे आगे बढ़ जाते हैं। ऐसा ही एक अवसर इसके जीवन में भी आया। हिंदू सभा के वार्षिकोत्सव में कालाकांकर के राजा रामपाल सिंह आए। उन्होंने इस युवक के आगे 'हिन्दुस्थान' पत्र के संपादक बनने का प्रस्ताव रखा। हिल साहब ने आश्वासन दे रखा था "कानून पास करते ही मुंसिफ बनवा दूँगा।" कानून पास करने में कुछ ही महीने रह गए थे। संपादक का काम उन दिनों घाटे का सौदा था। वह अस्थाई तो था ही साथ-साथ आर्थिक दृष्टिकोण से भी महत्त्वहीन था। मुंसिफ बनने में दुतरफा लाभ था। युवक ने पत्र-संपादक बनना ही स्वीकार किया। वह जानता था कि अपनी प्रतिभा व योग्यता का उपयोग वह संपादक बनकर भली प्रकार जन-जागरण के लिए कर सकेगा।

'हिन्दुस्थान' के संपादक का काम करते हुए अमृतलाल ने अनुभव किया कि वे अभी इंटर भी पास नहीं कर पाए हैं। उन्हें संपादक के नाते अपनी शिक्षा पूरी करना चाहिए। राजा साहब ने मुझे संपादक बना दिया पर मुझे अपनी कमी तो पूरी करनी चाहिए। सन् १८८६ में उन्होंने संपादकी छोड़ दी। घर जाकर पूरी तैयारी करके इंटर की परीक्षा में बैठे। इंटर अच्छे अंकों से पास करके ही संपादन क्षेत्र में आए।

बंगाली होते हुए भी हिंदी के प्रति इनकी बहुत रुचि थी। पूरे देश को एकसूत्र में बाँधने का काम कोई भाषा कर सकती थी तो वह थी हिंदी, इतने विशाल देश की भाषा का साहित्य भंडार भी विशाल होना चाहिए। स्वयं भी वे उच्चकोटि के साहित्यकार बनना चाहते थे जिससे इस भंडार को भर सकें तथा अन्य साहित्यकारों को प्रेरणा दे सकें। इसके लिए हिंदी का विस्तृत ज्ञान आवश्यक था। इंटर पास करके इन्होंने 'भारत मित्र' कार्यालय में नौकरी कर ली। सुबह शाम काम करते और दिन में मेट्रोपोलिटन इन्स्टीट्यूट में पढ़ते। इस प्रकार १८९० में उन्होंने बी० ए० किया।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इनकी प्रेरणा से ही बंगवासी वालों ने महाभारत का अनुवाद निकाला। 'हिंदी बंगवासी' पत्र भी इन्हीं के प्रयासों से निकला। बंगाली क्षेत्र में हिंदी का प्रचार करने के लिए इस पत्र के माध्यम से आपने पर्याप्त काम किया। दस वर्ष तक 'हिंदी बंगवासी' का संपादन करते हुए उन्होंने कई पुस्तकें लिखीं। इन्हें प्रसिद्ध की चिंता नहीं थी। 'लेखक को प्रसिद्धि का लोभ नहीं करना चाहिए।' यह समझाने के लिए इन पर अपना नाम प्रकाशित नहीं कराया।

स्वाभिमानी, प्रगतिशील तथा जनता की आवाज के समर्थक होने के कारण इन्हें पत्र-पत्रिकाओं में काम करना पड़ा। इन्होंने जिस पत्र को हाथ में लिया उसे ही सुविकसित करके छोड़ा, जिसका परिणाम यह हुआ कि पत्र वालों ने पुनः इन्हें संपादन करने का आग्रह किया।

पत्रिकाओं से निकले जाने पर ये अपना कोई स्वतंत्र व्यवसाय करने लग जाते थे । कुछ समय तक 'ऑर्डर सप्लायर' का काम किया। फिर 'वेंकटेश्वर समाचार' का संपादन करने बंबई चले गए। वहाँ किसी का स्वार्थ टकराया, विचारधारा न मिली तो 'निगमागम चंद्रिका' के मैनेजर व संपादक बन गए। वहाँ से छूटे तो १९०६ में घर आकर मोदी की दुकान खोल ली। दुकान करते हुए स्वदेशी आंदोलन में भाग लिया। 'भारत मित्र' से फिर बुलावा आया। वहाँ तीन वर्ष तक काम किया। व्यवसायी और साहित्यकार दोनों के रूप में प्रायः बहुत कम व्यक्ति सफल होते हैं, लेकिन चक्रवर्ती जी इसके अपवाद थे। वे कहते थे दुकान करो या लेखन, जिसमें कुछ परिश्रम करने की हिम्मत व लगन है, वह हर क्षेत्र में सफल होता है। १९१३ में सेठ दामोदर राठी ने उन्हें अपने व्यावर, राजस्थान वाली मिल में मैनेजर बना दिया। अच्छा पद, आय और सुख-सुविधा उन्हें अपने उद्देश्य से

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

डिगा न सकी। 'वेंकटेश्वर समाचार' से बुलावा आया तो मैनेजरी छोड़कर बंबई पहुँच गए। सेठ दामोदर दास वहाँ भी बुलाने पहुँचे। उन्होंने उत्तर दिया—"माफ कीजिए सेठ साहब हिंदी लिखे बिना रहा नहीं जाता।" सत्य है चक्रवर्ती जी की तरह स्वार्थ के साथ परमार्थ को जोड़ा नहीं जाए तो मनुष्य और पशु में अंतर ही क्या रह जाएगा?

चालीस वर्षों तक इन्होंने हिंदी भाषा के भंडार को अपने साहित्य से भरा। एक बंगला भाषी प्रदेश के निवासी होते हुए भी हिंदी के प्रति इनकी जो श्रद्धा थी वह हिंदी भाषी प्रदेश के साहित्यकारों के लिए एक प्रेरणा बनकर उभरी। इनके कार्यों को ध्यान में रखते हुए इन्हें १९२५ में हिंदी साहित्य-सम्मेलन के सभापति का गौरवपूर्ण पद दिया गया। हिंदी साहित्य भंडार को समृद्ध बनाने के साथ-साथ इन चालीस वर्षों में आपके मार्गदर्शन में कई पत्र-पत्रिकाएँ जन्मीं, विकसित हुईं तथा जाग्रत नागरिकों का निर्माण करने की महत्त्वपूर्ण भूमिका इन पत्रिकाओं ने निभाई। चक्रवर्ती जी जैसे लोक सेवकों के प्रयासों का ही परिणाम है कि आज हिंदी राष्ट्र भाषा का सम्मान पा रही है।

चालीस वर्षों में उन्होने हिंदुस्तान, भारत मित्र, हिंदी बंगवासी, बेंकटेश्वर समाचार, कलकत्ता-समाचार, निगमागम चंद्रिका, फारवर्ड श्री सनातन-धर्म आदि पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जन-जागरण का बिगुल बजाया। इनके मार्गदर्शन तथा संपादकत्व में ये पत्र पत्रिकाएँ समृद्ध हुईं।

जरा-सी कठिनाई तथा असुविधा के आते ही हिम्मत पस्त हो जाने की अपेक्षा चक्रवर्ती जी की तरह साहस तथा परिश्रम के शस्त्रों से सज्जित होकर कर्मक्षेत्र में उतरा जाए तो स्वयं के निर्वाह के साथ-साथ लोक-जागरण जैसा परमार्थ भी किया जा सकता है। ऐसी जीवंत आत्माएँ ही अज्ञानांधकार में ज्ञान किरणें फैला सकती हैं। ❐

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कनाडा का जनक—मेकडोनाल्ड

कनाडा आज विश्व के शक्तिशाली व संपन्न राष्ट्रों में गिना जाता है। आकार की दृष्टि से भी वह अन्य देशों की तुलना में बड़ा है। इस समृद्ध और विशाल राष्ट्र को अस्तित्व में लाने के लिए एक व्यक्ति ने कितनी कठिनाइयों का सामना किया, किस प्रकार उसने आपस में झगड़ने वाले छोटे-छोटे राज्यों को अपनी राजनैतिक प्रतिभा व बुद्धि बल के सहारे संगठित किया, इस संगठन के लिए उसे कितनी भयंकर जोखिम उठानी पड़ी, यह एक लंबी और दिलचस्प कहानी है। उस कहानी का नायक है 'जॉन अलेक्जेण्डर मेकडोनाल्ड,' जिसे कनाडा का जनक भी कहा जा सकता है।

मेकडोनाल्ड का कनाडा के इतिहास में वही स्थान है जो सं० रा० अमेरिका के इतिहास में अब्राहम लिंकन का है। अब्राहम लिंकन ने दास प्रथा के उन्मूलन को लेकर जिस प्रकार गृह युद्ध की भयंकर जोखिम उठाई थी उसी प्रकार अलेक्जेण्डर मेकडोनाल्ड ने ब्रिटिश कोलंबिया को कनाडा में मिलाने के लिए कनाडियन पैसिफिक रेलवे लाइन निर्माण की जोखिम उठाई थी।

इतना बड़ा काम करने वाले मेकडोनाल्ड की योग्यताओं की ओर दृष्टिपात करें तो वह हमें सामान्य सा आदमी ही लगता है, फिर वह कैसे यह कार्य कर सका? इस प्रश्न का उत्तर उसके धैर्य व साहस रूपी सद्गुण ही दे सकते हैं। अलेक्जेण्डर मेकडोनाल्ड का जन्म इंग्लैंड के ग्लास्गो नगर के एक सामान्य परिवार में सन् १८१५ में हुआ था। जब वह पाँच वर्ष का था तब उसके माता-पिता रोजगार के लिए कनाडा आ गए। वह केवल पाँच वर्ष तक ही नियमित रूप से स्कूल में पढ़ने जा सका था। उसके बाद पारिवारिक परिस्थितियों ने उसे कुछ-न-कुछ काम धंधा करने को विवश किया, परिणामस्वरूप पढ़ाई छोड़नी पड़ी। यही पाँच वर्ष तक स्कूल से पढ़ने जा सकने वाला मेकडोनाल्ड तैंतीस वर्ष की

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आयु में कनाडा की विधान सभा का सदस्य नियुक्त हुआ, अनुदार दल की ओर से।

नियमित पढ़ाई नहीं कर सकना उसके व्यक्तित्व के निर्माण में विशेष बाधक नहीं बना। पढ़ने की उसकी बड़ी इच्छा थी पर उसके लिए वह स्कूल जा सके ऐसी परिस्थितियाँ नहीं थीं। किंतु 'जहाँ चाह वहाँ राह' के प्राकृतिक नियम में विश्वास करने वाला मेकडोनाल्ड निराश नहीं हुआ। उसने दुनिया में इधर-उधर बिखरे ज्ञान को यत्नपूर्वक समेटकर अपने मस्तिष्क में संजोना आरंभ कर दिया। स्वाध्याय के द्वारा अपना बौद्धिक विकास करना उसने अपनी नित्य की दिनचर्या में सम्मिलित कर लिया।

मेकडोनाल्ड का यह श्रम व सूझ-बूझ काम आई। उसे एक वकील ने अपना क्लर्क बना लिया। कुछ वर्षों तक उक्त वकील के आफिस में काम करके अनुभव प्राप्त कर लेने के पश्चात उसने स्वतंत्र रूप से वकालत करना आरंभ कर दिया। उन दिनों वकालत के लिए आजकल की तरह एल० एल० बी० नहीं करना पड़ता था। सनद पाने के लिए एक सामान्य-सी परीक्षा दे देना ही पर्याप्त होता था।

वकील बन जाने के बाद भी उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ समाप्त नहीं हुई थी। वह राजनैतिक नेता बनकर कनाडा को एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में परिवर्तित करना चाहता था। विश्व राजनीतिक घटनाक्रम का गहराई से अध्ययन करने वाला मेकडोनाल्ड यह आवश्यक समझता था कि कनाडा भी सं० रा० अमेरिका की तरह संगठित हो जाए। इसके लिए अनुभव और योग्यता की आवश्यकता थी, जिसे उसने तत्संबंधी पुस्तकें पढ़कर व अपने निकट संपर्क में आने वाले वकील बंधुओं से ग्रहण किया।

साहसी तो वह परले दर्जे का था ही। जिस वर्ष उसने विधान सभा के लिए चुनाव लड़ा था, उसी वर्ष उसने एक ऐसा मुकदमा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लड़ा जिससे महारानी विक्टोरिया नाराज हो सकती थी और उनकी नाराजगी किसी भी कनाडा वासी के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकती थी, क्योंकि कनाडा उन दिनों एक ब्रिटिश उपनिवेश था। उसने सेंट लारेंस पार करके कनाडा में आ बसे कुछ अमरीकियों के पक्ष में मुकदमा लड़ा था। उसके इस साहस ने मतदाताओं का हृदय जीत लिया और वह विधान सभा पार्षद बन गया।

कनाडा उन दिनों एक छोटा-सा ब्रिटिश उपनिवेश भर था जिसमें थोड़े-से कीचड़ सने कस्बे और आधे साफ हुए खेतों के अतिरिक्त जंगल-ही-जंगल था। यह सेंट लारेन्स के आस-पास ही फैले हुए थे। बस यही छोटा सा भू-भाग कनाडा कहलाता था। बड़ी मुश्किल से १८४१ में वर्तमान ओन्टेरियो और क्यूबेक प्रदेशों को संगठित करके कनाडा को थोड़ा बड़ा आकार दिया जा सका। इस एकीकरण में नए-नए पार्षद मेकडोनाल्ड का बड़ा सहयोग रहा।

इन तीन प्रदेशों के संयुक्त कनाडा के अतिरिक्त अंध महासागर से लगे हुए नोता स्कौंटिया, न्यू ब्रुसविक, प्रिंस एडवर्ड आइसलैंड और न्यू फाउडलेण्ड आदि ऐसे राज्य थे जो आपस में झगड़ा करते थे और कनाडा उनके लिए एक वीरान विदेशी राज्य जैसा था। इसके बीच इन प्रदेशों में रहने वालों की ब्रिटिश प्रोटेस्टेन्ट व फ्रेंच कैथोलिक सांप्रदायिक आस्थाएँ भी दीवारों का काम कर रही थीं। ऐसी विषम स्थिति में कनाडा के एकीकरण का स्वप्न मेकडोनाल्ड जैसा दुस्साहसी व्यक्ति ही देख सकता था।

कनाडा को एकीकृत करके एक बड़ा राष्ट्र बनाने का मेकडोनाल्ड का सपना चंद वर्षों में ही पूरा नहीं हो गया। इसकी प्रगति कछुए की चाल से हुई। अत्यधिक मंद गति के बीच उसे राजनीतिक क्षेत्र में असफलताएँ भी मिलीं। पर वह इनसे निराश होने वाला नहीं था। उसके प्रयास चलते ही रहे। कनाडा में ही अभी एकता नहीं थी। फ्रेंच कैथोलिक और ब्रिटिश प्रोटेस्टेन्ट आपस में

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खींचतान किया करते थे। मेकडोनाल्ड की पहली सफलता यह थी कि वह इनका एक संयुक्त संगठन बनाने में सफल हुआ।

कनाडा का एकीकरण करके उसे एक शक्तिशाली राष्ट्र बनाने का उसका यह सपना उसकी कोई व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा नहीं थी वरन वह इसके पीछे संपूर्ण कनाडावासियों का हित देखता था, क्योंकि बिना छोटे-छोटे राज्यों के एक हुए इस प्रदेश का कुछ भी भविष्य नहीं था। किंतु उसकी इस दूरदर्शिता को उसके देश के राजनीतिज्ञ भी समझ नहीं पा रहे थे। उसकी अपनी लिवरल कंजरवेटिव पार्टी भी दो प्रकार के मतवादियों का गठबंधन थी, जो मात्र राष्ट्र में अपना प्रभुत्व रखना चाहती थी।

अपने विचारों से पार्टी के सदस्यों व देशवासियों को सहमत कराने के उसके प्रयास चलते ही रहे। उनका प्रभाव मंदगति से ही सही पर होता रहा। १८५७ में वह अपने उपनिवेश का प्रधानमंत्री बना। उसका विचार भी तब तक लोगों के दिमाग में पहुँच चुका था। प्रधानमंत्री बनने पर वह अपनी बात और अच्छे ढंग से समझा सका था।

इन्हीं दिनों अमेरिका में गृहयुद्ध की आग भड़क उठी थी। इंग्लैंड ने दक्षिणी राज्यों का समर्थन किया था। कनाडा ब्रिटिश उपनिवेश होने के नाते उत्तरी राज्यों के कोप का शिकार हो सकता था। इस आशंका ने उसके इस विचार की पुष्टि की। उसके विरोधी भी उससे सहमत हुए। जार्ज ब्राउन नामक उसका घोर विरोधी राजनैतिक नेता भी उसके साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार हो गया।

यहाँ मेकडोनाल्ड ने बड़ी तेजी से काम किया। यह अवसर था जब कनाडा में एकीकरण के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ बन रही थीं। इनसे लाभ उठाने में वह चूका नहीं। तभी उसे ब्रिटिश गवर्नर जनरल का आदेश मिला संविधान सभा भंग करने के संबंध में।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

साहस और धैर्य के धनी मेकडोनाल्ड ने उक्त आदेश को अपनी आलमारी की दराज में डाल दिया और वह तुरंत जार्ज ब्राउन के पास पहुँचा। एक घंटे की बातचीत के बाद उन्होंने अपनी संयुक्त सरकार बनाकर ब्रिटिश उपनिवेशों को एकीकृत करके वृहद् कनाडा राज्य की स्थापना करने के लिए जोरदार प्रयत्न करने का निश्चय कर लिया।

इन दोनों ने मिलकर ब्रिटिश उपनिवेशों के एकीकरण के लिए प्रयास करने आरंभ कर दिए। महीनों भाषणों, राजनीतिक समझौतों और प्रचार के बाद १८८४ में यह निश्चित हुआ कि सब उपनिवेश मिल जाएँ। इसी उद्देश्य से क्यूवेक में प्रतिनिधि बुलाए गए संविधान की रचना करने के लिए। लंबे प्रयास और राजनीतिक गठजोड़ के बाद एक बड़ा देश—कनाडा कागजों पर अस्तित्व में आया।

इसके लिए जान अलेक्जेन्डर मेकडोनाल्ड को क्या-क्या नहीं करना पड़ा। वह दिन में संविधान सभा के सामने आई भिन्न-भिन्न गुत्थियों को सुलझाने के लिए सिर खपाता। रात्रि में उसे दूसरे उपनिवेशों से आए हुए प्रतिनिधियों के मनोरंजन और संतुष्टि के लिए हर संभव प्रयत्न करने पड़ते। किंतु यह सब उसने अपने लिए नहीं सभी उपनिवेशों के हित के लिए किया था। अपने इस आचरण द्वारा मेकडोनाल्ड ने यह आदर्श प्रस्तुत किया है कि राजनीतिक दावपेंच भी किसी सदुद्देश्य के लिए काम में लाए जाने चाहिए, न कि अपनी व्यक्तिगत स्वार्थ साधना के लिए।

जब सभी उपनिवेशों के प्रतिनिधि नए विशाल राष्ट्र कनाडा की नई राजधानी ओटावा में एकत्रित हुए और जब मेकडोनाल्ड भाषण देने खड़ा हुआ तो वह कतई राजनीतिज्ञ नहीं लग रहा था। उसका झुर्रियों भरा लंबोतरा चेहरा और ढीली-ढाली वेशभूषा उसके व्यक्तित्व को कोई आकर्षण प्रदान नहीं कर रही थी, किंतु जब उसने भाषण देना शुरु किया तो श्रोता मंत्र मुग्ध हो सुनते ही रह गए।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

१ जुलाई, १८६७ को ओटावा में नए संघ राज्य कनाडा की स्थापना हुई। इस दिन सारे देश में उत्सव मनाए गए। अभी तक इसमें चार राज्य आन्टेरियो, क्यूबेक, नोवा स्कोटिया और न्यू ब्रुन्सविक ही सम्मिलित हुए थे। मेकडोनाल्ड इस देश का प्रधानमंत्री बना।

अभी ब्रिटिश कोलंबिया नामक समृद्ध उपनिवेश को इसमें और मिलना बाकी था। इसके लिए जान अलेक्जेन्डर मेकडोनाल्ड ने अटलांटिक से प्रशांत महानगर तक रेलवे लाइन बनाने की शर्त पर समझौता किया जो बहुत भारी पड़ता था। चालीस लाख से भी कम जनसंख्या वाला कनाडा कैसे सैंट लारेन्स से प्रशांत महासागर तक रेलवे लाइन बना सकता था? मार्ग में बड़ी-बड़ी झीलें, दलदल और राकी पर्वत जैसी बाधाएँ खड़ी थीं, पर मेकडोनाल्ड अपने स्वप्न को सत्य करके रहा। इसके लिए उसे अपना प्रधानमंत्री पद भी दाव पर लगाना पड़ा। किंतु कनाडियन पैसिफिक रेलवे निर्मित हुई। यों कहना चाहिए कि मेकडोनाल्ड ने अपना बलिदान दे दिया इसके लिए। इस रेलवे लाइन के निर्माण को लेकर उसे जितनी दिक्कतें व विरोध सहने पड़े, जितना अधिक काम करना पड़ा उसे उसकी दुर्बल काया सह न सकी। १८८५ में इस रेलवे लाइन के बन जाने के कुछ ही दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

कनाडा का निर्माता अपने उस स्वप्न को साकार कर गया जो नितांत असंभव लगता था, मेकडोनाल्ड के जीवन की यह कहानी मानवीय कर्तृत्व की अनूठी मिसाल है। ❐

शरीर से अपंग पर मन से समर्थ- हेलेन केलर

मिस हेलन केलर नारी जाति का गौरव थीं । उन्होंने ८७ वर्ष की दीर्घ आयु में यह सिद्ध कर दिखाया कि पुरुषार्थ केवल पुरुष की ही बपौती नहीं है, नारी की भी है और उसमें उसका नेत्रहीन होना, मूक तथा बधिर होना किसी प्रकार से बाधक नहीं।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस अमेरिकन देवी ने नेत्रहीन तथा नेत्रवान नर-नारियों के सम्मुख अपना ही उदाहरण प्रस्तुत करके कहा—'दृढ़ संकल्प वह महान शक्ति है जो मानव की आंतरिक शक्तियों को विकसित कर प्रगति पथ पर ला खड़ा करती है।' केलर ने अदम्य साहस तथा अभूतपूर्व मनोबल द्वारा संसार को चकित तो किया ही, नेत्रहीन और विकलागों के लिए भी आश्रय बन गईं।

२७ जून, १८८० को जन्म लेने वाली वह बालिका ६ माह की आयु में घुटनों चलने लगी और एक वर्ष की होने पर बोलने लगी। जब १९ माह की हुई तो यह फूल सी कोमल थी और हर दृष्टि से स्वस्थ। एक दिन साधारण-सा ज्वर आया, पिता ने काफी चिकित्सा कराई, ज्वर तो कुछ दिनों बाद चला गया, पर उसे नेत्रहीन तथा बधिर बना गया। कुछ सुन नहीं सकती थी इसलिए उसके लिए बोलना भी कठिन था। केलर ने अपनी असमर्थताओं को देखा तो छटपटाने लगी, माता-पिता भी अपनी लाड़ली बेटी की यह दुर्गति देखकर दुःखी हुए।

पिता को बिल्कुल भी आशा न थी कि उसकी पुत्री अब कुछ कर सकेगी। उसका बचपन जिन भयंकर कठिनाइयों से होकर बीता उन्हें देखकर किसी को आशा होती भी कैसे? एक दिन उसकी माँ बैठे-बैठे समाचार पत्र पढ़ रही थीं कि उनकी दृष्टि बोस्टन की परकिन्स संस्था पर जा पड़ी। उन्होंने पूरा विवरण पढ़ा तो माँ की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। अखबार अलग कर दिया। ६ वर्षीय केलर को अपनी ओर खींचकर उसका माथा चूमा और बोली ऐसा लगता है बेटी अब तेरा सौभाग्य उदय होने वाला है, मैं तुझे बोस्टन ले जाऊँगी।

माँ के आग्रह पर पिता ने परकिन्स संस्था से संबंध स्थापित किया और उस संस्था की संरक्षिका ने उनके घर आकर पढ़ाना स्वीकार कर लिया। केलर के जीवन में परिवर्तन यहीं से प्रारंभ होता

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

है। उसकी शिक्षा प्रारंभ हो गई और तीन वर्ष में उसे सारे संसार के लोग जान गए। वह इतने से ही संतुष्ट होने वाली न थी, उसने अपने मन में संकल्प किया कि मैं अपने जैसे विकलांग बच्चों की हर संभव सहायता करूँगी और उन्होंने ऐसा कर भी दिखाया।

वह सारे संसार में ६ बार घूमीं और विकलांग व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति पूर्ण वातावरण निर्मित किया। उन्होंने प्रत्येक देश से करोड़ों रुपए की धनराशि एकत्रित की और उसमें से अपने लिए एक पैसा भी खर्च न किया। उन्होंने विकलांगों के लिए अनेक संस्थाएँ स्थापित कीं।

अल्पायु में ही पिता की मृत्यु हो गई। प्रसिद्ध विचारक और साहित्यकार मार्कट्वेन को उस बच्ची पर दया आ गई, उन्होंने उसके सामने एक प्रस्ताव रखा—'केलर! मेरी इच्छा है तुम्हारी पढ़ाई के लिए अपने मित्रों से कुछ धन एकत्रित करूँ।'

केलर के स्वाभिमान को ठेस लगी। उसने संयत स्वर में कहा—'यदि आप चंदा करना ही चाहते हैं तो मेरे लिए नहीं बल्कि मुझ जैसे विकलांग बच्चों के लिए करिए। जिससे उन्हें आश्रय मिल सके।'

केलर द्वारा एक चाय पार्टी का आयोजन किया गया, वहाँ उपस्थित लोगों को उसने अपनी बात समझाई तो थोड़ी ही देर में दो हजार डालर की राशि एकत्र हो गई। वह दौड़ी-दौड़ी विचारक ट्वेन के पास पहुँची और बोली—'आप उस दिन चंदा एकत्रित करने की बात कह रहे थे। लीजिए यह धन उसी कोष में जमा कर लीजिए।'

इतना सुनकर ट्वेन के मुख से निकला—'संसार का आठवाँ आश्चर्य।' निश्चय ही वह संसार का महानतम आश्चर्य थी। भविष्य में जब-जब इस विचारक की भेंट केलर से हुई तो उसने अनुभव किया कि इस विकलांग देवी ने मानवीय चरित्र को नई गरिमा ही नहीं बल्कि मानव-पुष्प को नई सुगंधि भी प्रदान की है।

केलर की अध्यापिका सुलीवान बड़ी कठिनाई से वर्णमाला का ज्ञान करा सकी। एक-एक अक्षर को केलर कई-कई घंटों तक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुहराती थी, तब कहीं याद होते थे। अब वह बोलने का प्रयास भी करती थी और आंशिक सफलता भी उसे मिल रही थी। उसकी सफलता के पीछे उसका संकल्प बल कार्य कर रहा था।

कठिन परिश्रम के फलस्वरूप उन्होंने लैटिन, फ्रेंच और जर्मन भाषा का ज्ञान प्राप्त कर लिया। ८ वर्षों के घोर अध्यवसाय ने उन्हें स्नातिका बना दिया। अब उन्होंने अपनी योग्यता का उपयोग नेत्रहीनों के लिए प्रारंभ किया। केलर ने ब्रेल लिपि में अनेक पुस्तकों का अनुवाद किया और मौलिक ग्रंथ भी लिखे। 'मेरी जीवन कहानी' नामक आत्मकथा संसार की ५० भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी है।

केलर द्वारा रचित 'मेरा धर्म' नामक पुस्तक पढ़ने से ज्ञात होता है कि वह अपने में आत्मा की शाश्वत ज्योति शिखा का अनुभव करती थी। उनके नेत्र नहीं थे तो क्या ? आत्मा का प्रकाश उन्हें राह दिखाता था। बधिर होते हुए भी वह अंतराल के संगीत की गूँज सुन सकती थीं। उनका हर सपना रंगीन था और हर कल्पना स्वर्णिम थी।

सुलीवान उनकी शिक्षिका ही नहीं जीवन संगिनी भी थीं। उनकी सहायता से ही केलर ने टालस्टाय, कार्लमार्क्स, नीत्शे, रवींद्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी और अरस्तू जैसे महान विचारकों के साहित्य को पढ़ा।

विश्व की अनेक विभूतियों से भी उनकी भेंट हुई थी। रवींद्रनाथ टैगोर और प्रधानमंत्री पं० नेहरू से मिलने पर वह बहुत प्रभावित हुई थी। उसकी मस्तिष्क शक्ति इतनी जागरूक थी कि आगंतुक की पदचाप से ही वे बहुत कुछ बता देती थीं। बोलने वाले के कंठ और अधरों को स्पर्श कर उस शब्द को पहचानती थीं, साथ ही स्वयं उच्चारण भी करती थीं। उनके शरीर का रोम-रोम कंपन चेतन हो गया था।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

वे विभिन्न रंगों को स्पर्श कर पहचान लेती थीं, उनका कहना था कि हरे रंग में कोमलता, नीले में प्रकाश, गुलाबी में शीतलता और लाल में उष्णता होती है। उनसे एक सज्जन ने पूछा—'केलर! आप तो नेत्रहीन हैं और १९ माह की आयु से आपको इस संसार की कोई वस्तु देखने को नहीं मिली तो आपको पता भी नहीं चलता होगा कि दिन और रात कब होते हैं?'

केलर का विज्ञान सम्मत उत्तर था—'दिन में हलचल अधिक रहती है। हवा का प्रवाह मंद रहता है। वातावरण में कंपन बढ़ जाता है। और शाम को वातावरण शांत और कंपन में कमी आ जाती है। सारी सृष्टि के विश्राम के कारण वातावरण बिल्कुल शांत और मधुर हो जाता है।'

घोड़े की सवारी उन्हें प्रिय थी और उस पर बैठकर जब वे हवा से बातें करती थीं तो दर्शकों का दिल धड़कने लगता था, वह अशुभ की कल्पना करने लगते थे। पर केलर ने नेत्रों के बिना ही दिशाओं का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। प्रभु के चरणों में जीवन का भार सौंप देने वाली केलर बिल्कुल निश्चिंत थी।

स्वावलंबन उनके जीवन का प्रमुख गुण था। भोजन बनाने, वस्त्र पहनने और सफाई, धुलाई के कार्य में वे किसी से सहायता न लेती थीं। यह तो उनके रोज के ही काम थे।

८१ वर्ष की आयु में २७ जून, १९६८ को हृदय का दौरा पड़ जाने से वह इस संसार से विदा हो गईं, पर उनके जीवन की अद्‌भुत कहानी प्रत्येक मानव को जन्म-जन्मांतर तक प्रेरणा देती रहेगी और पुरुषार्थ का महत्त्व बताती रहेगी।

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org